तृतीय अध्याय

सुश्री ऊषा प्रियंवदा के कथात्मक साहित्य में प्रतिबिंबित समाज --

तृतीय अध्याय

सुश्री ऊषा प्रियंवदा के कथात्मक साहित्य में प्रतिबिंबित समाज --

साहित्य समाज की प्रतिच्छाया है, जिसमें मानव जीवन का विशुध्द चित्रण होता है । साहित्य प्रमुख रुप से समाज से संबंधित है, इसीलिए उसका रुप सामाजिक है । साहित्य में एक ओर व्यक्ति की भावनाओं को मूर्त रुप मिलता है, तो दूसरी ओर उसमें युगधर्म झाँकता दिखाई देता है । समाज परिवर्तनशील है । स्थिरता जडता का प्रतिक है । साहित्य इस परिवर्तनशील समाज का बिंब है । वही साहित्यकार श्रेष्ठ होता है, जो युगबोध के अनुकूल समाज की सही मूल्यांकित स्थिति को प्रस्तुत करता है ।

साहित्य का प्रयोजन केवल मनोगत या शिल्पगत वैचित्र्य नहीं है, बल्कि अपने माध्यम से समाज में होनेवाले आवर्तन - परिवर्तन से विलोड़ित जनता की सामाजिक स्थिति, सभ्यता-संस्कृति का प्रकटीकरण है । किसी भी साहित्यकार का सही मूल्यांकन तभी हो सकता है, जब कि साहित्य के सामाजिक अर्थ और उपयोगिता को भलीभाँति समझा जाये । और इस अर्थ और उपयोगिता को समझाने के लिए उसमें समाज की स्थिति का विश्लेषाण करना होगा ।

सुश्री ऊषा प्रियंवदाजी के कथात्मक साहित्य में भी समसामायिक समाज का यथार्थ चित्रण मिलता है । समाज का दायरा अत्यंत व्यापक होता है । उसका समग्र विवेचन करना यहाँ संभव नहीं है । अत: हमने ऊषा प्रियंवदाजी के कथात्मक साहित्य में प्रतिबिंबित समाज के महत्वपूर्ण पक्षों का ही विस्तृत विवेचन किया

हैं । वे पक्ष निम्नप्रकार के हैं :----

१. समाज और व्यक्ति,
२. परिवार संस्था,
३. विवाह संस्था,
४. स्त्री-पुरुष संबंध,
५. आर्थिक पक्ष,
६. धार्मिक पक्ष,
७. सांस्कृतिक पक्ष,
८. विधि-संस्कार ।

समाज और व्यक्ति ---

व्यक्ति समाज की मूलभूत इकाई हैं । व्यक्तियों के समूह से ही समाज बनता हैं । समाज जहाँ व्यक्ति को सुविधायें प्रदान करता हैं, वहीं वह उसपर अनेक सामाजिक निर्बन्ध भी लगा देता हैं । यद्यपि यह बंधन समाज को व्यवस्था प्रदान करते हैं और मानव व्यक्तित्व के विकास में इस समाज व्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान भी स्वीकार किया गया हैं । फिर भी व्यक्ति को महत्वहीन नहीं माना जा सकता । वास्तव में व्यक्ति और समाज एक - दूसरे के पूरक हैं । परन्तु परंपरागत सामाजिक विचारधारा के संदर्भ में आदर्शवादी और समाज के सावयवी सिध्दांत के समर्थकों ने समाज को लक्ष्य मानते हुए व्यक्ति को निमित्य मात्र स्वीकार किया । वे व्यक्ति को सामाजिक परिवेश से भिन्न ग्रहण नहीं करते थे । समाज से पृथक व्यक्ति स्वातंत्र्य में उनका विश्वास नहीं था । वे समाज को सर्वोपरि मानते थे । अत: प्राचीन साहित्य में व्यक्ति अपने मौलिक रूप में नहीं वरन् सामाजिक परिप्रेक्ष्य में ही चित्रित हुआ हैं ।

परंतु आधुनिक युग में वैज्ञानिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तिवाद का विकास हुआ । १८वी शताब्दी के व्यक्तिवादियों ने यह घोषित किया था, कि

मनुष्य प्राकृतिक अवस्था में स्वतंत्र और समान पैदा हुआ और उसने सामाजिक संबंधों की स्थापना केवल व्यवस्था और सुरक्षा की सामाजिक सुविधाओं को पाने के लिए की है।"[1] इस विचारधारा के अनुसार समाज को व्यक्ति के उद्देश्य पूर्ति में अधिका-धिक सहयोग देना चाहिए।

स्वातंत्र्योत्तर काल में इसी व्यक्तिवादी विचारधारा को बढ़ावा मिला जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक परिवेश में समाज के स्थान पर व्यक्ति को प्रतिष्ठा मिली है। व्यक्ति अपने अहं और स्वतंत्र-चेतना के कारण परंपरागत मूल्यों, आदर्शों, मान्यताओं और सामाजिक बंधनों को नकारने लगा है। व्यक्ति के नवीन जीवन दृष्टि में परंपरागत समाज व्यवस्था के मूल्य निरर्थक सिध्द होने लगे हैं, अत: अब व्यक्ति परंपरागत मूल्यों के स्थान पर नवीन मूल्यों को आत्मसात करने लगा है। इस नव मूल्य परिग्रहण की प्रक्रिया में व्यक्ति के लिए संघर्ष अनिवार्य बन गया है।

आधुनिक साहित्यकारों ने भी नवीन जीवन दृष्टि के परिपार्श्व में विकसित व्यक्तिवादी विचारधारा को अपनाकर साहित्य सृजन किया। सुश्री ऊषा प्रियंवदाजी भी व्यक्तिवादी विचारधारा में विश्वास करती है। "ऊषा प्रियम्वदा व्यक्ति की स्वतंत्रता और निजता में अधिक विश्वास करती है। वे मानती है कि मानव मूल्यों के विकास की दृष्टि से मनुष्य का स्वतंत्र विकास अनिवार्य है। उसकी इच्छाओं पर कोई बंधन न हो। उनके अनुसार परंपरा, संस्कार या अध्यात्मिक आधार तो आधुनिक जीवन में कोई महत्व नहीं रखते। वे वस्तुत: वक्तित्व का विभाजन कर जीवन में कृत्रिमता उत्पन्न करते है। मनुष्य को धर्म निरपेक्ष होना चाहिए। उसका वास्तविक धर्म "स्व" है, "मन" है।"[2]

---

१ "समाज" लेखक - मैकाइवर एवं पेज -हिंदी अनुवाद - जी. विश्वेश्वरय्या - रतन प्रकाशन मंदिर, प्र.सं. १९६४ - पृ. ४५

२ हिन्दी उपन्यास - सुरेश सिन्हा - लोकभारती प्रकाशन, द्वि.सं. १९७२- पृ. ३६१।

स्पष्ट हैं , कि प्रियम्वदाजी समाज से अधिक व्यक्ति को महत्वपूर्ण मानती हैं । उनके अनुसार परंपरागत सामाजिक रूढ़ियाँ और संस्कार व्यक्ति के स्वाभाविक विकास में बाधक हैं । उनके विचार में समाज और उसकी परंपराएँ मनुष्य को सहायता नहीं देती, बल्कि उसके मन में निराशा और कुंठा उत्पन्न करती हैं । उनकी यह मान्यता उनके साहित्य में सहज रूप से दृष्टिगोचर होती हैं । इस शोध-प्रबन्ध के संदर्भ में लिखे गये पत्र में उन्होंने लिखा हैं --' प्राय: मेरे पात्र समाज या रूढ़िवाद से कटे रहते हैं ।' अर्थात् उनके साहित्य के अधिकांश पात्र परंपरागत सामाजिक मान्यताओं के प्रति अनास्था और व्यक्ति स्वातंत्र्य के प्रति आस्था रखते हैं । तथा जब कभी उनके निजी स्वातंत्र्य में समाज तथा उसकी मान्यतायें अवरोध निर्माण करती हैं तो वह उन सामाजिक मान्यताओं के विरोध में विद्रोह करते हैं ।

प्रियम्वदाजी के कथात्मक साहित्य में व्यक्ति की महत्ता का प्रतिपादन दो रूपों से हुआ हैं । एक प्रत्यक्ष, जिसमें स्पष्टता समाज के महत्व का तिरस्कार करते हुए अथवा समाज को गौण रूप में स्वीकार कर व्यक्ति-स्वातंत्र्य विरोधी सामाजिक स्थापनाओं के प्रति विद्रोह प्रदर्शित हुआ हैं । दूसरा परोक्ष जहाँ समाज की प्रत्यक्ष अस्वीकृति न होकर विभिन्न कर्मों, घटनाओं या परिस्थितियों के माध्यम से परंपरागत सामाजिक मूल्यों के प्रति आक्रोश एवं तज्जन विरोध की अभिव्यक्ति हुई हैं ।

हमारा समाज परम्परागत रूढ़ियों से ही चिपका रहने के कारण समाज में अज्ञान और अकर्मण्यता की प्रवृत्ति अधिक रही हैं । जिसके कारण वह अन्य देशों से अधिक पिछडा रहा हैं । पाश्चात्य परिवेश से परिचित आज के नवयुवक को हमारे समाज की यह स्थिति अब अखरने लगी हैं ।' रुकोगी नहीं राधिका ?' उपन्यास का मनीश जो सात साल विदेश में रहकर जब स्वदेश लौट आता हैं, तो अपने देश का सामाजिक परिवेश देखकर उसका मन आक्रोश से भर जाता हैं, वह राधिका से कहता हैं --' मेरा मन बार-बार हुआ, कि मैं किसी से चीख कर

कहूँ कि, आप लोगों ने किसी स्वस्थ दिशा की ओर तरक्की क्यों नहीं की । माना, कि हम पिछडे हुए हैं, पर हम कम-से-कम सभ्य और शिष्ट तो हो सकते हैं । अपनी जहालत और अलस्य को दूर कर सकते हैं । पर नहीं, यहाँ तो हैं न कि जिससे जितना बन पडता है, उतना ही सताने पर तुल जाता है ।' [१]

हमारे समाज में कतिपय ऐसी मान्यतायें रूढ हैं,तो व्यक्ति की स्वतंत्रता में बाधक हैं । स्त्री-पुरुष संबंधों के संदर्भ में अन्य देशों में जितनी स्वतंत्रता है, उतनी हमारे देश में नहीं है । हमारे समाज में विवाह के बिना कोई भी स्त्री-पुरुष एक-दूसरे से सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकते । ' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास की सुषमा जब अपने मौसी से यह कहती है, कि और देशों में बिना शादी किये ही औरतें कैसे मजे से रहती हैं, तो इस पर उसकी मौसी हमारे समाज की संकुचितता की ओर संकेत करते हुए उसे कहती है -- ' जैसे रहती हैं, वह मुझे पता है । तुम एक पुरुष मित्र बनाकर तो देखो, तुम्हारी अम्मा सबसे पहले तुम्हारी खबर लेगी । हमारा समाज किसी को जीने नहीं देता ।' [२]

समाज के इस रूढिवादी तथा संकीर्ण प्रवृत्ति के कारण व्यक्ति के मन में उसके प्रति अनास्था निर्माण होने लगी है । ' प्रतिध्वनि ' कहानी की नायिका वसु को समाज में आस्था नहीं है, वह कहती है -- ' मेरे लिए सारी दुनिया कालापानी है । सारे लोग मरे हुए हैं ।' [३]

' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' की सुषमा समाज और व्यक्ति को पृथक मानती है । अत: जब उसकी सहाध्यापिकायें सामाजिक मापदण्डों का आधार लेकर

---

१ रुकोगी नहीं -- राधिका,ऊषा प्रियंवदा- अक्षर प्रकाशन,पाँचवा सं., १९८० - पृ. १०३

२ पचपन खम्भे लाल दीवारें - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, चतुर्थ सं., १९८४ - पृ. ११

३ कितना बडा झूठ - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन,तृतीय सं., पृ. ३०

उनकी साथी स्वाति सेन के व्यक्तिगत जीवन को लेकर कटु आलोचनायें करने लगती हैं, तो सुषामा क्रोधित होकर कहती हैं --` आप के सामाजिक मापदण्ड यह कहते हैं कि आप सब के सामने किसी के व्यक्तिगत जीवन की धज्जियाँ उड़ा दीजिए ? हरेक का जीवन एक ऐसा अनुलंघनीय दुर्ग है जिसका अतिक्रमण करना किसी का अधिकार नहीं है ।`[१]

सुषामा की सहेली मीनाक्षी भी समाज को अनुदार पाती है । समाज की इस कुप्रवृत्ति की ओर संकेत करते हुए वह कहती है --` दुनिया की यही रीति है सुषामा -- दूसरे के फटे में पैर अडाना सब को अच्छा लगता है । और हम बहुत प्रबुध्द, प्रगतिशील महिलाएँ बनने का दम भरती हैं ।`[२]

आज हमारे देश ने शैक्षणिक,आर्थिक,राजकीय आदि अनेक क्षेत्रों में प्रगति की है परन्तु सामाजिक दृष्टि से वह अब भी पिछडा हुआ ही है । ` रुकोगी नहीं, .... राधिका ? ` उपन्यास के अक्षय के अनुसार --` चाहे भारत कितना ही उन्नत क्यों न हो गया तो, सामाजिक परिवेश अभी उतना नहीं बदला, बदलने में अर्धशती तो बीतेगी ही ....`[३]

उपर्युक्त विवेचन में व्यक्ति की महत्ता का प्रतिपादन प्रत्यक्ष रूप से हुआ है । प्रियम्वदाजी के साहित्य में परोक्ष रूप से भी व्यक्ति महत्ता का चित्रण हुआ है । इसमें समाज के स्थान पर व्यक्ति की स्थापना के निमित्य,व्यक्ति का समाज के प्रति विरोध प्रत्यक्ष न होकर रीति-रिवाज,परम्परा,संस्कार आदि संबंधित मूल्यों के प्रति विद्रोह में प्रतिफलित हुआ है । व्यक्ति का समाज से प्रत्यक्ष रूप से संघर्ष की अपेक्षा परोक्ष रूप से संघर्ष का क्षेत्र विशाल है, क्योंकि

---

१ पचपन खम्भे लाल दीवारें - उषा प्रियम्वदा,राजकमल प्रकाशन, चतुर्थ सं., १९८४ - पृ. २९

२ - वही -

३ रुकोगी नहीं ... राधिका ?` उषा प्रियम्वदा,अक्षर प्रकाशन, पाँचवा सं., १९८० - पृ. ६१ ।

इसका संबंध समाज के सभी पहलुओं से होता है ।

आज का व्यक्ति परंपरागत रूढ़ियों और परंपराओं का विरोध कर रहा है । रस्मों - रिवाजों के प्रति होनेवाली आस्थायें अब टूट रही हैं । ' रुकोगी नहीं ... राधिका ' उपन्यास की राधिका भी रूढ़ियों और परंपरामें विश्वास नहीं करती । इसीलिए उसे किसी अनजान पुरुष से सप्तपदी की रस्म पूरी करवा कर विवाह करना पसंद नहीं है ।'[१] ' शेषायात्रा ' उपन्यास की अनु भी यह जानती है, कि ' रस्मअदाई से न तो विवाह होते हैं, न तलाक ।'[२] ' प्रतिध्वनि ' कहानी की वसु विवाह को एक 'मीनिंगलेस रस्म' तथा मातृत्व को एक बायॅलॅाजिकल घटना मानती है ।'[३]

वर्तमान युग में पारिवारिक बंधन के प्रति अधिक वैज्ञानिक, मुक्त और मानवीय दृष्टि अपनाई गई है । अब विगत का परंपरागत आग्रह नहीं है । आज के युवक-युवती माता-पिता की इच्छा के प्रतिकूल प्रेम-विवाह कर सकता है । जाति-पाँति, देश-धर्म की सीमायें लाँघकर वह इच्छित व्यक्ति से विवाह कर नवीन मूल्यों की प्रतिष्ठा कर रहा है । प्रियम्वदाजी के ' चांदनी में बर्फ पर ' कहानी का हेमंत अपने माता-पिता की इच्छा के विरुध्द एक अमेरिकन लडकी से विवाह करता है । ' सागर पार का संगीत ' कहानी की देवयानी भी देश, धर्म, परिवार आदि सारे बंधनों को तोडकर एक कॅनेडियन युवक से विवाह करती है ।

आज पारिवारिक स्नेह-बंध भी टूट रहे हैं । ' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास में सुषमा की मौसी सुषमा को उसके व्यक्तिगत सुख के लिए सचेत करते हुए इस स्थिति की ओर संकेत करती है । वह कहती है -- ' कुछ अपने बारे में भी सोचो सुषमा । यह भाई-बहन किसी के नहीं होते । सब अपने-अपने घर के

---

१ रुकोगी नहीं ..... राधिका ?' उषा प्रियम्वदा, अक्षर प्रकाशन, पाँचवा सं., १९८० - पृ. ३६

२ ' शेषायात्रा ' उषा प्रियम्वदा, राजकमल प्रकाशन, प्र.सं. १९८४-पृ. ८३

३ ' कितना बडा झूठ ' - उषा प्रियम्वदा - पृ.३४

होंगे । आज की दुनिया में कौन किसका होता है ।` [१]

सम्बन्धों के प्रति आज के व्यक्ति में विरक्ति की भावना पनपने लगी है ।` शेषायात्रा ` उपन्यास का प्रणव अपनी पत्नी से संबंध समाप्त करना चाहता है वह अपनी पत्नी अनु से कहता है --` अनु , तुम समझाने की कोशिश क्यों नहीं करती, हमारे संबंध खत्म हो गये हैं, मैंने अपना रास्ता चुन लिया है, मैं चाहता हूँ कि तुम भी अपनी जिंदगी अपने आप गढ़ो । अपने आप खेओ ।` [२] कालान्तर से अनु भी संबंधों का अस्थायित्व महसूस करती है, वह सोचती है -- ` संबंध भी,प्राणियों और पेड-पत्तियों की तरह होते हैं, उन्हें पानी न मिले तो धीरे-धीरे सचमुच मर जाते हैं ।` [३]

उत्तरदायित्वहीन स्वच्छन्द जीवन के प्रति युवा पिढी का विशेष लगाव रहा है । उषाजी के ` संबंध ` कहानी की श्यामला भी उत्तरदायित्व हीन और विरागमयी जीवन जीना चाहती है । इसीलिए वह अपने परिवार तथा देश से संबंध तोडकर दूर विदेश में आकर अकेली, स्वतंत्र रहने लगती है ।

` शेषायात्रा ` का प्रणव भी स्वच्छन्द और उत्तरदायित्वहीन जीवन जीना चाहता है । उसके विचार में ...` सबकुछ मिलाकर सच्चाई तो यह है .... कि किसी को किसी की जरूरत नहीं होती है । अन्ततः हमें अपने ` स्व ` से ही जुड़ाना होता है । हम सब अपने को अकेला पाते हैं । शादी, ब्याह, गिरस्ती, रिश्ते - जब तक चलते हैं तभी तक के रहते हैं । किसमें इतनी ताकत है कि साथ-साथ दूसरे प्राणी की जिम्मेदारी ढोता रहे, जिसमें होगी, हो - मुझमें नहीं है ।` [४]

---

१ पचपन खम्भे लाल दीवारें - उषाप्रियम्वदा, राजकमल प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण - १९८४ - पृ. ११

२ शेषायात्रा - राजकमल प्रकाशन, प्र.सं. १९८४ - पृ. ६६

३ - वही - पृ. १२३

४ - वही - पृ. ९४ ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

आधुनिक काल में व्यक्ति प्रतिष्ठा के प्रयत्न में नारी का भी महत्वपूर्ण योग है । आज की नारी में समाज के परंपरागत ढाँचे के प्रति विद्रोह की भावना विद्यमान है । परंपरागत संदर्भ में नारी किसी की पत्नी, प्रेयसी, माँ या बेटी रही है, पर व्यक्ति रूप में कुछ नहीं थी, परंतु आज नारी अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए सचेत हो गयी है । `शेषायात्रा` की अनु को पति द्वारा त्याग दिये जाने पर इस बात का रंज है, कि `मैं एक व्यक्ति की हैसियत से कुछ भी नहीं रही, जो कुछ थी, वह सब श्रीमती कुमार की हैसियत से । बार-बार लगता कि मैंने वह साल क्यों खो दिये, बिरियानी और कबाब बनाने में ? कुछ किया क्यों नहीं, अपने को कुछ आगे क्यों नहीं बढाया ।` [1]

वर्तमान समाज में नारी अपने को पुरुष के समकक्ष मानने लगी है । वह पुरुष की अनुवर्ती मात्र न होकर अब अपने स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति भी जागरूक है । आज नारी आत्मनिर्भर बन स्वयं अपना मार्ग निर्धारित करने लगी है । तथा अपने इस मार्ग में रोडे बने परम्परागत रूढ मान्यताओं और रूढियों के विरुध्द संघर्ष करने लगी है ।

नारी स्वातन्त्र्य के लिए पहली आवश्यकता है आर्थिक स्वतंत्रता की प्राप्ति । आर्थिक समानाधिकार मिलने पर ही आज की नारी सच्चे अर्थों में समाज का अंग बन सकेगी । प्रियम्वदाजी के अधिकांश नारी पात्र आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर है -- `पूर्ति` कहानी की तारा, `दो अँधेरे` की सुमित्रा, `छुट्टी का दिन` की माया, `कोई नहीं` की नमिता, `पचपन खम्भे लाल दीवारें` की सुषमा, `रुकोगी नहीं ,.... राधिका ?` उपन्यास में राधिका और विद्या तथा `शेषायात्रा` उपन्यास में विभा, निरजा, दिव्या आदि नारियाँ स्वतंत्र रूप से अर्थार्जन करती है ।

---

१ शेषायात्रा - उषा प्रियम्वदा - राजकमल प्रकाशन - प्र.सं. १९८४ - पृ. ११३

वर्तमान युग में नारी का घर से बाहर स्वतंत्र रूप से रहना भी प्रगतिशीलता का प्रतिक बन गया है । ' रुकोगी नहीं,.... राधिका ? ' उपन्यास में राधिका अपने परिवार से पृथक होकर स्वतंत्र रूप से अलग रहने लगती है । अक्षय के मित्र शंकर के अनुसार यह पाश्चात्य विचारों का प्रभाव है, वह राधिका से कहता है ..... आप वहाँ (अमरिका में) रही है, पढी है .... और शायद बहुत कुछ पाश्चात्य विचारों की हो गई है । नहीं तो माता-पिता से अलग होकर रहने की बात कितनी लडकियाँ सोचती है ? ' इसपर राधिका कहती है - ' तभी तो हमारे यहाँ कितनी लडकियों का चरित्र पूर्णत: विकसित हो पाता है ? रहा मेरा सवाल, मैं स्वेच्छापूर्ण जीवन की इतनी आदी हो गई हूँ कि विघ्न सह नहीं पाती ।'[१] राधिका का यह कथन व्यक्तित्व विकास में पारिवारिक बंधन से मुक्त होने की आवश्यक्ता पर बल देता है ।

नारी के पिछडेपन का बहुत कुछ उत्तरदायित्व पुरुषों पर ही है, पुरुष नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व की कामना नहीं करता । ' शेषायात्रा ' उपन्यास की एक पात्र कीरत कहती है --' .... आदमी तो चाहते ही है कि उनकी बीवियाँ छुई-मुई बनी रहें और वह मजे मारें ।'[२]

परंतु आज की नारी अबला नहीं है । अत: परंपरागत नारियों की भाँति वह पुरुष का अन्याय नहीं सहती, बल्कि उसके विरोध में विद्रोह करती है । ' स्वीकृति ' कहानी में यह बात दिखाई देती है । इस कहानी की जया का पति सत्य उसकी भावनाओं और इच्छाओं की परवाह न कर उसे केवल अपनी उन्नति का सहायक मानता था । इसीलिए, जया, वाल नाम्क युवक से संबंध स्थापित कर सत्य के प्रति विद्रोह करती है ।

---

१ रुकोगी नहीं,.... राधिका ? - ऊषा प्रियम्वदा - अक्षर प्रकाशन - पाँचवा संस्करण - १९८० - पृ. ६३

२ शेषायात्रा - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, प्र.सं. १९८४ - पृ. ३२ ।

' शेषयात्रा ' की एक पात्र डेडी, नायिका अनु, जो पति द्वारा त्याग दिये जाने के कारण टूट सी गयी है, से कहती है ---- ' तुम अपने को क्यों कष्ट देती हो ? .... आदमी जो कर सकता है, वह हम औरतें भी कर सकती हैं । अगर आदमी इधर-उधर मजा करे तो हम क्यों न करें । '[1] अनु की सहेली दिव्या भी अनु को अपने दुःख से उबरकर आत्मसम्मान की रक्षा करने की सलाह देते हुए कहती है --' खूबसूरत बच्ची । तू क्यों अपने को मिट्टी में मिला रही है । अगर उस शख्स ने तेरी कद्र नहीं की तो रोने-बिसूरने के बजाय उसे जिन्दगी से जाने दे । '[2]

आज की युवा पीढ़ी अपने व्यक्तित्व विकास के लिए व्यक्तिगत स्वातंत्र्य को अत्याधिक महत्व देती है । अत: वह अपने व्यक्तिगत जीवन में किसी का हस्तक्षेप सह नहीं सकती । ' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास की सुषमा व्यक्तिस्वातंत्र्य में विश्वास करती है । इसीलिए जब उसकी सहेली मीनाक्षी उसके व्यक्तिगत जीवन को लेकर कॉलेज में चली चर्चाओं का जिक्र करती है , तो वह क्षोभ से कहती है '.... मैं अपना काम ठीक से करती हूँ, मुझसे किसी को शिकायत नहीं, फिर मेरे व्यक्तिगत जीवन में किसी को दखल देने का क्या हक है ? '[3]

' शेषयात्रा ' उपन्यास का प्रणव भी यह मानता है , कि - हम सभी को अपनी अपनी मान्यताओं के साथ रहने का अधिकार है । '[4] ' शेषयात्रा ' उपन्यास का एक अन्य पात्र दिव्या भी इस बात में विश्वास करती है, कि ' आखिरकार हरेक को अपनी जिंदगी अपनी तरह जीने का अधिकार है[5]। '

---

१ शेषयात्रा - उषा प्रियवंदा - राजकमल प्रकाशन,प्र.सं. १९८४-पृ. ६३
२ -वही- पृ. ७५
३ पचपन खम्भे लाल दीवारें - उषा प्रियम्वदा, राजकमल प्रकाशन-चतुर्थ - - संस्करण - १९८४ - पृ. ५३
४ शेषयात्रा - उषा प्रियवंदा - राजकमल प्रकाशन- प्र.सं. १९८४-पृ. ४२
५ शेषयात्रा - उषा प्रियवंदा - राजकमल प्रकाशन -प्र.सं. १९८४-पृ.

'रुकोगी नहीं .... राधिका ?' उपन्यास की राधिका उच्च मध्यवर्गीय परिवार की युवती है, वह अपने परिवेशगत संस्कारों के कारण मुक्त और विद्रोही है। इसीकारण वह अपने व्यक्तिगत जीवन में पिता तक का हस्तक्षेप भी नहीं सहती। वह कहती है --' जो आप चाहते है, वहीं हमेशा क्यों हो ? क्या मेरी इच्छा कुछ भी नहीं है ? मैं आपकी बेटी हूँ यह ठीक है, पर अब मैं बडी हो चुकी हूँ, और मैं जो चाहूँगी वही करूँगी।'[१]

'एक कोई दूसरा' कहानी में नायिका निलांजना के गुरु भी उसे, उसके जीवन के संदर्भ में सलाह देते हुए, व्यक्ति स्वातंत्र्य का ही समर्थन करते है। वे अपनी शिष्या से कहते है --' तुम क्या चाहती हो ? तुम्हारा जीवन तुम्हारा है। तुम्हें अपना पथ निर्धारित करने का अधिकार है।'[२] अर्थात् आज व्यक्ति परंपरागत सामाजिक बंधनों से मुक्त और स्वतंत्र होकर सुख और स्वच्छन्दता का अनुभव कर रहा है। 'सम्बन्ध' कहानी की श्यामला सभी बंधनों को तोडकर अकेली रहती है। उसके प्रेमी सर्जन को श्यामला के इस वैराग्यपूर्ण जीवन पर गुस्सा आता है। परंतु श्यामला सोचती है, कि -' वह सर्जन को कभी भी न समझा पायेगी कि इस तरह स्वतंत्र, असंपृक्त रूप से एक सुख है, स्वार्थ भरा पर है सुख।'[3]

'प्रतिध्वनि' कहानी की वसु माँ के बंधन को तोड देने के पश्चात् स्वच्छन्दता का अनुभव करती है --' मुक्त होकर उसे पहली बार लगा था कि वह एक आकर्षक युवती है, उमगें और कामनाएँ मरी नहीं है। अपने में निहित स्वतन्त्र, पूर्ण, व्यक्तित्व को पाना कितनी बडी उपलब्धि थीं। और श्यामल (पति) के अंकुशों से निकल कितना हलका हलका लगता रहता था।'[४]

---

१ रुकोगी नहीं,... राधिका ? अक्षर प्रकाशन-पाँचवा सं., १९८० - उषा प्रियंवदा - पृ. ५१

२ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, द्वि.सं., १९८६ - पृ. २६

3 कितना बडा झूठ - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, तृ.सं. १९७६-पृ. १०।

४ कितना बडा झूठ - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, तृ.सं. १९७६ - पृ. ३४।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है, कि आज बदलती हुई सामाजिक परिस्थितियाँ और व्यक्तिवादी दृष्टिकोण के फलस्वरूप विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रति व्यक्ति का दृष्टिकोण अधिकाधिक वैयक्तिक होता गया है । उसकी प्रवृत्ति युगीन मूल्यों, युगीन विश्वासों का निराकरण करने में प्रवृत्त है । फिर भी समाज का अस्तित्व तो किसी सीमा पर स्वीकार करना ही होगा ।

समाज : परिवार - संस्था ---

सामाजिक संगठन का मूल आधार परिवार रहा है । परिवार समाज की महत्वपूर्ण संस्था है । परिवार में रहकर ही व्यक्ति सामाजिक अनुकूलन की शिक्षा प्राप्त करता है, अतः व्यक्ति के समाजीकरण की प्राथमिक पाठशाला परिवार ही है । समाज का सातत्य बनाये रखने का महत्वपूर्ण कार्य भी परिवार द्वारा ही संपन्न होता है, यही कारण है कि विश्व की सभी संस्कृतियों में परिवार संस्था का अस्तित्व रहा है ।

सुश्री ऊषा प्रियंवदाजी के कथात्मक साहित्य का विषय मध्यवर्गीय तथा उच्च मध्यवर्गीय समाज रहा है । अतः उनके साहित्य में चित्रित पारिवारिक जीवन भी इसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है । आधुनिक परिवार के विविध रूपों, मध्यवर्गीय लोगों के पारिवारिक जीवन का स्वरूप, परिवार की समस्याएँ तथा परिवर्तित पारिवारिक मान्यताओं आदि का उन्होंने यथार्थ चित्रण किया है ।

भारत के परंपरागत परिवार का रूप संयुक्त था । और संयुक्त परिवार ही भारत के पारिवारिक जीवन की आधारशीला थी । ऊषाजी के 'शेषयात्रा' उपन्यास में इस परंपरागत संयुक्त परिवार की झाँकी देखने को मिलती है । उपन्यास की नायिका अनुका का ननिहाल एक संयुक्त परिवार है । जिसमें उसकी नानी, बड़े मामा - बड़ी मामी, छोटे मामा - छोटी मामी, ममेरे भाई-बहनें आदि सभी सम्मिलित रूप से रहते हैं । घर की रचना भी पुरानी ही

हैं - ' अनु ने बचपन से ही वही पुराने ढंग का घर देखा और जाना था । उसमें ड्योढी थीं, मेहराबदार दालान, मुजरेवाली कोठी, चौकोर कमरे, घुटी-घुटी बंद कोठरियाँ, तहखाने, दुछत्तियाँ, सण्डास, कहारिन, नाई, बूढी महाराजिन ।' [१]
संयुक्त परिवार में परिवार का सब से बडा व्यक्ति परिवार का कर्ता होता था । स्त्रियों के गृहस्थी के कार्यों में भी यही बात थी । परिवार की सबसे बडी स्त्री पर ही गृहस्थी की पूरी जिम्मेदारी रहती थी, तथा अन्य लोग उसके काम में हाथ बँटाते थे । अनु की बडी मामी घर की मालकीन थी, ... बडी मामी दूध और धोबी का हिसाब रखतीं, घर के खाने-पीने की भी जिम्मेदारी उन पर ही थी । छोटी मामी सज सँवरकर बैठी रहती, उपन्यास पढती, जेठ-जेठानी को अपने हाथ से पान बनाकर देती ।' [२]

संयुक्त परिवार में अनेक सदस्य रहने से उसका कार्यभार भी विस्तृत रहता है । इसीकारण गृहस्वामिनी को काम की व्यस्तता में से अपने लिए समय निकालना बहुत मुश्किल रहता है । 'प्रतिध्वनि' कहानी में इस बात का जिक्र हुआ है - ' जीजी की कोठी इस समय देवरानियों, जेठानियों, बन्धुबांधवों से खचाखच भरी हुई थी । सबके नाश्ते, खाने, रात के भोजन, दूध के इन्तजाम, धोबी से झिक-झिक, इन सब में उलझे हुए जीजी का सारा-समय निकल जाता था । शाम को जूडा बाँध साडी पहन थोडी देर टहलने निकल जाएँ, तो बहुत गनीमत थी ।' [३]

परंपरागत संयुक्त परिवार में स्त्रियों को स्वतंत्रता नहीं थी । समाज और परिवार के बंधनों में वह घिरी रहती थी । उसे पुरुषों से अपदस्त देखा

---

१ शेषायात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, प्र.सं. १९८४ -पृ. ११
२ - वही - पृ. ११
३ कितना बडा झूठ - उषा प्रियंवदा - तृतीय सं., १९७६ - राजकमल प्रकाशन- पृ. २२ ।

जाता था, अत: वह पुरुषों के सामने नहीं आती थी । घर की चारदीवारी में ही उसकी दुनिया सिमट जाती थी । बाहरी दुनिया से उसका कोई तालूक नहीं रहता था । घर से बाहर वह कभी-कभार ही जाती थी ।` शेषायात्रा` उपन्यास में इस स्थिति का उल्लेख मिलता है --` घर में भी सिर्फ त्यौहार या शादी पर ही स्त्रियों का बाहर निकलना होता था । घर में भी दालान में चारपाइयाँ पडी रहती,आनेवाले पुरुष वहीं बैठते, औरतें अन्दर चली आतीं ।` [१]

संयुक्त परिवार की यह भी एक विशेषाता रहती थी, कि इसमें कई निराश्रित परिजनों का पालन होता था, जैसे विधवा स्त्रियाँ,अनाथ बालक आदि । ` शेषायात्रा` उपन्यास की अनु भी माता-पिता विहीन होने से उसकी परवरिश ननिहाल के संयुक्त परिवार में होती है । अनाथ तथा निराश्रित लोगों को सुरक्षा प्राप्त हाने की दृष्टि से संयुक्त परिवार अपना महत्व रखता है । परन्तु इसमें कुछ दोषा भी है । संयुक्त परिवार में बडा अनुशासन रहता था, जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता था । वे आत्मनिर्भर नहीं बन पाते थे । ` शेषायात्रा ` उपन्यास कीअनु में भी परंपरागत संयुक्त परिवार में पलने के कारण आत्मनिर्भरता का अभाव है । विवाह के पश्चात् विदेश में रहनेपर भी वह अपने पारंपारिक संस्कारों में ही घिरा रहती है । नित्यप्रति की छोटी-छोटी बातों के लिए भी वह पति की राय लेती रहती है --` प्रणव से मशविरा किये बिना वह कोई निर्णय नहीं ले पाती,` आज क्या खाओगे ` से लेकर ` मैं शाम को क्या पहनूँ ` सभी कुछ प्रणव की मर्जी से होता है ।` [२] विवाह के पूर्व अनु अपने परिवार पर निर्भर थी और विवाह के पश्चात पति पर । अनु में आत्मनिर्भरता की कमी का कारण उसका ननिहालवाला संयुक्त परिवार का परंपरागत संस्कार

---

१ शेषायात्रा - उषा प्रियवंदा - राजकमल प्रकाशन,
प्रथम संस्करण - १९८४ - पृ.११

२ शेषायात्रा - उषा प्रियवंदा - राजकमल प्रकाशन ,
प्रथम संस्करण - १९८४ - पृ. २६

है --' जिन्दगी की यह पटकथा अनु को बचपन से ही मिली थी । वह किसी चीज के लिए जिम्मेदार नहीं है, उसकी सारी जिन्दगी दूसरों ने निर्धारित की थी ।' १

संयुक्त परिवार व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में बाधक होने लगा । अत: वह वर्तमान युग में अपना महत्व खो बैठा । स्वाधीनता के पश्चात् भारत में नयी अर्थव्यवस्था का उदय हुआ, जिसके फलस्वरूप संयुक्त परिवार संस्था में दरार पड गयी । इस नयी अर्थव्यवस्था में अर्थ ही प्रधान होगया, समाज में आय के अनुसार मनुष्य की स्थिति निर्धारित होने लगी , जिससे कमानेवाले और न कमानेवालों के बीच खाई स्पष्ट हो गया और संयुक्त परिवारों का विघटन होने लगा ।

प्रियंवदाजी के ' रुकोगी नहीं, ... राधिका ? ' उपन्यास में राधिका के ननिहाल के विघटित परिवार का चित्र दिखाई देता है । संयुक्त परिवार के भाइयों के अलग रहने से पैतृक सम्पत्ति का भी विभाजन होता है - माँ के परिवार में राधिका के तीन मामा थे, एक बाल-विधवा मौसी, एक बूढी नानी । लखनऊ में नौ कमरों का एक पैतृक मकान, जिसमें रज्जु मामा के हिस्से में तीन कमरे आये थे । मौसी और नानी बारी-बारी से मामाओं के पास रहती थी ।' २

संयुक्त परिवार में परिवार के बडे बुजुर्ग व्यक्तियों को आदर की दृष्टि से देखा जाता था और परिवार में उनका ही शासन रहता था । आज के स्वतंत्र विचारों की युवा पीढी को परिवार में होनेवाला बडे बुजुर्गों का अधिपत्य अंकुश की तरह चुभने लगा है । जिससे परिवार में तनाव की स्थिति निर्माण हो गया है । परिणाम स्वरूप परिवार विघटन की प्रक्रिया को बढावा मिला । ऊषाजी के ' वापसी ' कहानी में इसी कारणवश गजाधर बाबू के परिवार में विघटन को

---

१ शेषायात्रा - ऊषा प्रियवंदा - राजकमल प्रकाशन - प्रथम संस्करण - १९८४ - पृ. २६

२ रुकोगी नहीं, ... राधिका ?' - ऊषा पियंवदा - अक्षर प्रकाशन, पाँचवा संस्करण-१९८०- पृ. २२ ।

स्थिति दिखाई देती है --' ... फिर उनकी पत्नी ने ही सूचना दी कि अमर अलग रहने की सोच रहा है । .... अमर और उसकी बहू की शिकायतें बहुत थीं । उनका कहना था, कि गजाधर बाबू हमेशा बैठक में ही पडे रहते हैं, कोई आने-जाने वाला हो तो कहीं बैठाने की जगह नहीं । अमर को अब भी वह छोटा-सा समझाते थे और मौके-बेमौके टोक देते थे । बहू को काम करना पडता था और सास जब तब पूनहडपन पर ताने देती रहती थीं ।' [१]

परिवार के विघटन तथा औद्योगिकरण से परिवार के परंपरागत व्यवसाय नष्ट हो गये । विघटित परिवार के सदस्यों ने अपनी जीविका चलाने के लिए नौकरी पेशा को अपनाया । नौकरी से प्राप्त आमदनी इतनी कमी रहती है, कि उसमें गृहस्थी चलाना मुश्किल होता है। जिसके कारण मध्यवर्गीय लोगों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पडा है ।' रुकोगी नहीं,.... राधिका ? उपन्यास में राधिका के रज्जु मामा की आर्थिक विपन्नता को दिखाया गया है । रज्जु मामा एक सेकेण्डरी स्कूल के शिक्षक हैं, उनकी आमदनी इतनी कम है कि वह परिवार की जरुरी आवश्यक्ताओं की भी पूर्ति नहीं कर सकते -' यह बात जरुर है कि जो कुछ धनाभाव के कारण है, वह झट से दृष्टि में आ जाता है, वैसे रज्जु मामा का स्वास्थ्य था छोटे के जूते को पालिश करने पर भी पुरानापन, या मामी के कमरें की दीवारों से झारता चूना या मौसी की धोती में जगह-जगह भरी हुई खोपे ।' [२]

परिवार की इस आर्थिक विपन्नता से उबरने के लिए आज की शिक्षित युवतियाँ भी नौकरी करने लगी हैं । अविवाहित युवतियों के नौकरी करने से पिता के गृहस्थी को एक आधार प्राप्त होता है । अत: अपने स्वार्थवश माता-पिता लडकियों के विवाह को टालते रहते हैं । आज के परिवारों में यह अविवाहित

---

१ मेरी प्रिय कहानियाँ - उषा प्रियंवदा - राजपाल एण्ड सन्स - प्र.सं. १९७४ - पृ.

२ रुकोगी नहीं, ... राधिका ?' - उषा प्रियंवदा ,- अक्षर प्रकाशन- पाँचवा संस्करण - १९८०- पृ. २३

कामकाजी युवतियों की समस्या गंभीर रूप धारण कर रही है । ऊषा जी के ' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास की सुषामा इसी परिस्थिति की शिकार है ।

आज आर्थिक स्वार्थभावना के कारण परिवारों में होनेवाली परस्पर स्नेह तथा आत्मियता की भावना लोप हो रही है । हर व्यक्ति अपने निजी स्वार्थ में लीन रहता है । इस स्वार्थभावना के आगे माता-पिता, भाई-बहन आदि कोई रिश्ते-नाते महत्व नहीं रखते । ' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास में सुषामा की मौसी इस बात की ओर संकेत करते हुए कहती है -- कुछ अपने बारे में भी सोचो सुषामा । यह भाई-बहन किसी के नहीं होते । सब अपने अपने घर के होंगे । आज की दुनिया में कौन किसका होता है ।' [१]

' जिन्दगी और गुलाब के फूल ' कहानी में भी भाई - बहनों के बीच होनेवाले सहज प्रेम - भावना का लोप दिखाई देता है । इस कहानी का नायक सुबोध किसी कारणवश नौकरी से इस्तिफा देता है । दूसरी नौकरी न मिलने से उसके बेकार रह जाने पर उसकी छोटी बहन वृंदा नौकरी कर अपने परिवार का आर्थिक भार संभालने लगती है, अत: परिवार में उसी की सत्ता बनी रहती है । सुबोध का पुरुषाही अहं वृंदा की इस सत्ता को स्वीकार नहीं कर पाता । साथ ही सुबोध बेकार रहने के कारण घर के छोटे-मोटे काम उसी को करने पडते हैं, जिसके कारण सुबोध को अपने परिवार में हीनता का एहसास होता रहता है । ऐसे में एक दिन अपनी बहन का अपने प्रति होनेवाला उपेक्षापूर्ण व्यवहार देख कर उसके मन में दमित क्रोध भभक पडता है -- ' तुम माँ - बेटी चाहती क्या हो ? आज मैं बेकार हूँ, तो मुझ से नौकरों सा बर्ताव किया जाता है । लानत है ऐसी जिन्दगी पर । .... मुझे मुफ्त का नौकर समझ लिया है ? पहले कभी तुमने मुझे यह

---

१ पचपन खम्भे लाल दीवारें - ऊषा प्रियवंदा - राजकमल प्रकाशन - चतुर्थ संस्करण - १९८४ - पृ.११ ।

काम करते देखा था ? .... उधर हमारी बहन है कि हुकूमत किया करती है । अब मैं समझ गया हूँ कि मेरी इस घर में क्या कद्र है । मैं आज ही चला जाऊँगा । तुम दोनों चैन से रहना ।'[१]

वर्तमान युग में पश्चिम की व्यक्तिवादी प्रणाली के प्रसार के कारण व्यक्तिस्वातंत्र्य की भावना प्रबल हो रही है, जिसके प्रभाव के कारण परिवारों के परंपरागत धारणाओं में जोरों से परिवर्तन होने लगा । परंपरागत परिवारों में व्यक्तिपर परिवार का कड़ा नियंत्रण रहता था, जो व्यक्ति-स्वातंत्र्य तथा व्यक्तित्व विकास में बाधक होने लगा, परिणाम स्वरूप परंपरागत परिवार के स्थान पर नये एकांगी परिवारों का उदय हुआ । नया परिवार पति-पत्नि तथा उनके अवयस्क बच्चों तक ही सीमित रहने से इसमें स्वच्छन्द जीवन का अवकाश अधिक रहने लगा । माता-पिता भी बच्चों को उनके व्यक्तित्व विकास के लिए स्वातंत्र्य देने लगे । जिससे व्यक्तिवादी भावना को बढ़ावा मिलने लगा । आधुनिक युग की लेखिका होने के कारण उषाजी के उपन्यासों में ऐसे आणविक परिवारों का चित्रण अधिक दिखाई देता है ।

व्यक्तिस्वातंत्र्य के प्रभाव के कारण आज आत्मनिर्भर हो जाने पर बच्चे अपने माता-पिता के पास नहीं रहना चाहते । इसीकारण परिवार के लड़के अपने विवाह के पश्चात् मूल परिवार से अलग गृहस्थी बसाते हैं । 'रुकोगी नहीं, ... राधिका ?' उपन्यास में राधिका के बड़े भाई विनय भी अपनी शादी के उपरान्त उनके ससुराल का व्यवसाय संभालने के लिए अलग गृहस्थी बसाते हैं । राधिका के भाई और भाभी अपने इस पृथक परिवार में इतना लिप्त रहते हैं, कि अपने मूल परिवार के प्रति किसी भी प्रकार का दायित्व निभाने के लिए तैयार नहीं हैं । इस बात की प्रचिति तब आती है, जब राधिका अपने पिता के दूसरे विवाह की

---

१ मेरी प्रिय कहानीयाँ - उषा प्रियंवदा - राजपाल एण्ड सन्स - प्रथम संस्करण - १९७४ - पृ. १३१

खबर लेकर उनके पास जाती हैं -` बड दा और भाभी को विभिन्न प्रतिक्रियाएँ हुई । भाभी जिन्हें हमेशा यह भय था, कि कहीं पापा या राधिका उनके पास आकर जम न जायें, शायद कुछ आश्वस्त हुई । बड दा को खबर मिली थी , पर वे विद्या के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे, फिर वे ससुराल के बिजनेस में इतना लिप्त थे, कि पापा से उन्हें लेना-देना ही क्या था ।` [१]

पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण आज-कल लडके ही नहीं, अपितु लडकियाँ भी व्यक्तिगत स्वातंत्र्य के लिए अपने माता-पिता से पृथक रहने लगी हैं । राधिका भी जब स्वयं को अपने परिवार में असंगत और ` मिसफिट` पाती है, तो वह भी उससे अलग होकर स्वतंत्र रूप से रहने लगती है । अपने यूँ पृथक रहने के संदर्भ में वह कहती हैं --` ... मैं स्वेच्छापूर्ण जीवन की इतनी आदी हो गई हूँ, हूँ, कि विघ्न सह नहीं पाती ।` [२]

आज की परिवर्तित परिस्थितियों के कारण पारिवारिक जीवन में भी विशृंखलता आ गयी है । अब यह स्थिति दिखाई देती है कि, व्यक्तिगत सुख के आगे परिवार के कोई भी रिश्ते नाते महत्व नहीं रखते । पारिवारिक संबंधों में एक बिखराव- सा आ गया है । `प्रियवंदाजी की` वापसी ` कहानी परिवार के इस परिवर्तित जीवनमूल्य का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती है । इस कहानी के गजाधर बाबू नौकरी के कारण अपने परिवार से दूर रहते थे । उनकी सेवा-निवृत्ती के पश्चात् वे बडी उमंग के साथ अपने परिवार में लौट आते हैं । लेकिन वहाँ आनेपर वह अपने को अपने ही परिवार में असंगत और अजनबी पाते हैं ---

` गजाधर बाबू उनके जीवन के केन्द्र नहीं हो सकते , ... किसी बात में हस्तक्षेप न करने के लिए निश्चय के बाद भी उनका अस्तित्व उस वातावरण

---

१ रुकोगी नहीं,.... राधिका ?` उषा प्रियवंदा -
अक्षर प्रकाशन,पाँचवा संस्करण -१९८० -पृ.४८

२ - वही - पृ.६३

का एक भाग न बन सका । उनकी उपस्थिति उस घर में ऐसी असंगत लगने लगी थी, जैसे सजी हुई बैठक में उनकी चारपाई थी ।' [१]

कभी-कभी परिवार में घटित किसी दु:खद घटना के आकस्मिक सदमें के कारण भी परिवार का संतुलन डगमगा जाता है, जिससे परिवार के सदस्यों से आत्मीयता की भावना लोप होकर एक कटापन समा जाता है ।' सुरंग ' कहानी में यह स्थिति दिखाई देती है - इस कहानी की माँ को अपने बेटे की मृत्यु से सदमा पहुँचा है, जिसके कारण उसका आचरण विचित्र बन जाता है । वह अपनी बेटियों को भी कभी प्यार नहीं करती ....' .. पर वे माँ न होकर अजनबी हो गई हैं । अरुणा को याद नहीं है, कि इन नौ वर्षों में उन्होंने कभी अरुणा के सर पर हाथ फेरा है या पास आकर बैठी है । बेबी जब कभी रोकर उनसे चिपट जाती थी तो वे उसे सिर्फ निर्मम हाथों से अलग कर देती थीं । अरुणा को माँ से शिकायत नहीं, अब वह उनसे गहन संवेदना रखती है, बेटे की मौत से माँ ऐसी क्यों हो गयी है, अब अरुणा खूब समझाती है ।' [२]

आज के भौतिकवादी युग में व्यक्ति की परिवार-संस्था के प्रति आस्थायें टूट रही हैं । व्यक्ति को जब परिवार से सहज स्नेह नहीं मिलता तो उसका मन परिवार के प्रति अनास्था से भर जाता है ।' रुकोगी नहीं, ... राधिका ? ' उपन्यास में यह बात दिखाई देती है । इस उपन्यास की राधिका को अपने परिवार के प्रति सहज लगाव है । और इस लगाव के कारण ही वह अमरिका से भारत लौट आती है । परंतु जब वह यह पाती है, कि उसे लेने के लिए हवाई अड्डे

---

१ मेरी प्रिय कहानियाँ - उषा प्रियंवदा - राजपाल एण्ड सन्स, प्र.सं. १९७४ - पृ. ८०

२ कितना बड़ा झूठ - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - तृतीय संस्करण - १९७६ - पृ. ७५ ।

पर कोई भी आत्मीय नहीं आया है, तब उसकी पारिवारिक भावनाओं को ठेस पहुँचती है । परिवार की ओर से अपने प्रति होनेवाले इस उपेक्षाभाव को देखकर उसका मन वितृष्णा से भर उठता है, वह सोचता है --' घर यदि कहीं घर है । पापा का घर ? बड़े भाई का घर ? दोनों में से किसी ने यह जरूरत अनुभव न की, कि राधिका से मिलकर कोई उसे साथ ले आये ।' [1]

वर्तमान काल में परिवारों का महत्व कम होने का महत्वपूर्ण कारण यह है कि पहले व्यक्ति के वह अनेक कार्य जो, कि परिवार द्वारा संपन्न होते थे, आज समाज के अन्य द्वितीयक समूहों और संस्थाओं द्वारा संपन्न हो जाते हैं, जैसे कपड़े धोने के लिए लाण्ड्रियाँ, बिमार होने पर अस्पताल, भोजन के लिए होटल आदि । ऐसी अनेक संस्थायें हैं जो कि व्यक्ति की उन आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं जिन्हें परिवार करता था, परिणामस्वरूप परिवार का महत्व कम हो रहा है । साथ ही आजकल बच्चे भी शिक्षा के कारण बचपन से ही परिवार से बाहर रहते हैं । संपर्क अभाव उनमें परिवार के प्रति विशेष लगाव नहीं रहता । अत: ऐसे परिवार के सदस्यों के संबंधों में दूराव की भावना पनपने लगती है । उषाजी के ट्रिप ' कहानी में इस स्थिति का विवेचन मिलता है --' बहुत पहले बच्चे थे, स्वस्थ, इन्टेलिजेन्ट, अब वे बड़े हो गये हैं और पिता ने उन्हें बोर्डिंग हाऊस में भेज दिया है। साल में एक बार घर आते हैं । हर बार और दूर होने लगते हैं । अक्सर दोनों लड़कों से क्या बातें करे, यह समझ नहीं पाती । लड़के माँ के रूटीन में बाधा नहीं डालते । पहले वह बच्चों को लेकर व्यस्त होना चाहती थी , तरह तरह के व्यंजन बनाती । पर बच्चों की रूचि अब बदलती जा रही है और माँ के बनाये पक्वान वह शिष्टतावश चख भर लेते हैं । पति । पति से उसके सम्बन्ध बड़े कारिलकेटेड हैं, वे हमेशा आत्मनिर्भर रहे हैं । कपड़े अपने-आप टॉग देते हैं । मोजे बनियानों का शुमार रखते हैं । कमीजे स्वयं लाण्ड्री को दे

---

१ रूकोगी नहीं,.. राधिका ? - उषा प्रियवंदा - अक्षर प्रकाशन - पाँचवा संस्करण - १९८० - पृ.१३

आते हैं और ले भी आते हैं । अपने कमरे को खुद साफ सुथरा रखते हैं । बच्चों के छोटे होने पर सुबह स्टोव पर चाय नाश्ता तैयार कर लेते थे और सुबह को क्लास को पढाने चले जाते थे ।'[1]

आत्मियता के अभाव में परिवारों में तनाव की स्थिति निर्माण हो जाती है । माता-पिता के तनावपूर्ण संबंध बच्चों के व्यक्तित्व पर कुप्रभाव छोड देते हैं - प्रियंवदाजी के 'झुठा दर्पण' कहानी में इस बात का जिक्र हुआ है -- 'इस आयु में ममी-डॅडी के अलग हो जाने से अमृता के दिल पर खरोंच-सी पड गयी । अमृता का जब तक विवाह न होगा, तब तक वह वैधानिक रूप से अलग न होंगे, यह निश्चय उन्होंने अमृता के कारण ही लिया था । उन दोनों में मतभेद तो सदा रहा, पर उनके अलग हो जाने की कल्पना उसने कभी न की थी । जवान डॉक्टर-पुत्र की मृत्यु के बाद से ममी टूट-सी गयी थीं । डॅडी अब भी आकर्षक थे । और सेक्रेटरी हमेशा चुनकर खूबसूरत रखते थे । यह बात नहीं, कि ममी में कोई दोष था, फिर भी और अमृता अपने को दोषी ठहराती । यदि वह न होती तो ममी पहले ही डॅडी से अलग हो जाती और जीवन के छिन्न सूत्रों को उसी प्रकार सँवार लेतीं । अब तो उनका जीवन हर प्रकार से रिक्त हो गया था, और अमृता के जीवन में अचानक जो दरार पड गयी उसने विश्वास को तोड दिया[2] ।

'प्रतिध्वनि' कहानी में भी माता-पिता में तलाक हो जाने पर बेटी पिता के पास रहने लगती है । बेटी को अपने परिवार में माँ की कमी निरंतर महसूस होती रहती है । इसी लिए एक बार माँ से मुलाकात होने पर वह माँ से कहती है -- 'कितने लोग आपकी बातें करते हैं । मुझे औरों के नॉर्मल घर देखकर

---

१ कितना बडा झूठ - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, तृतीय संस्करण - १९७६ - पृ. ५८

२ एक कोई दूसरा - ऊषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - द्वितीय संस्करण - १९८६ - पृ. ४०

कभी-कभी महसूस होता है कि आप घर होती, तो अच्छा रहता ।'[१]

आज तलाक के कारण कई आणविक परिवार भी विघटित हो रहे हैं । अत: परिवार अपना परंपरागत महत्व खो रहे हैं । इसीकारण अब परिवार की परिभाषा करना भी कठिन हो गया है ।' प्रतिध्वनि ' कहानी में नायिका वसू ने उसके पति श्यामल से तलाक लिया है । अत: दोनों अलग अलग रहते हैं । बेटी पिता के पास रहती है । अपने घर के बारे में सोचते हुए वसू को यह उलझन हो रही है कि घर किसे कहें - ' घर ' ? कहाँ है अब घर ? जहाँ श्यामल और बेटी है या दो कमरोंवाला अपना फ्लैट ?' [२]

व्यक्तित्व के स्वच्छन्द विकास के निमित्य, गृह कलह तथा तनाव से मुक्ति पाने के लिए आणविक परिवार का निर्माण हुआ । परंतु संबंधों के तनाव का प्रभाव आणविक परिवार पर भी पडा है ।' शोषायात्रा ' उपन्यास के प्रणव को आणविक परिवार भी बंधन प्रतित होता है । इसका मूलकारण पति-पत्नी के विचारों में होनेवाला अंतर है । अत: प्रणव वैवाहिक बंधन से मुक्त होने के लिए पत्नी को तलाक देता है । वह कहता है --' शादी, ब्याह, गिरस्ती, रिश्ते - जब तक चलते हैं, तभी तक के रहते हैं । किसमें इतनी ताकत है , कि साथ साथ दूसरे प्राणी की जिम्मेदारी ढोता रहें, जिसमें होगी हो - मुझमें नहीं है ।' [३]

---

१ कितना बडा झूठ - उषा प्रियवंदा - राजकमल प्रकाशन, तृतिय संस्करण - १९७६ - पृ. ३४

२ कितना बडा झूठ - उषा प्रियवंदा - राजकमल प्रकाशन, तृतीय सं., १९७६ - पृ. ३५

३ शोषायात्रा - उषा प्रियवंदा - राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण -१९८४ - पृ. ९४

'चाँदनी में बर्फ पर' कहानी में भी हेमन्त और मीरा के दाम्पत्य जीवन में तनाव की स्थिति दिखाई देती है -- 'दोनों के बीच सहज आलाप का जो निर्बाध स्त्रोत था, अचानक ही चुक गया है। पति-पत्नी साथ रहते हैं, पर हेम में एक बेगानापनसा घर करता जा रहा है।'[1] यह तनाव दोनों के संस्कारों में होनेवाले अंतर से निर्माण हुआ है। परन्तु परिवार फिर भी बना रहा है।

यद्यपि आज परिवार में संघर्ष, मन-मुटाव, तनाव होने के कारण परिवार का परंपरागत रूप बदल गया है परन्तु फिर भी 'संस्कारगत पारिवारिक भावनाएँ अभी पूरी तरह मृत नहीं हुई हैं।'[2] मानव को किसी भी जीवन स्तर पर परिवार को अपनाना ही पड़ेगा, क्योंकि समाज का सातत्य परिवार-संस्था पर ही निर्भर है।

---

१ एक कोई दूसरा - ऊषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, द्वितीय संस्करण - १९८६- पृ. १०८।

२ 'रुकोगी नहीं,... राधिका ?' - ऊषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - पाँचवा संस्करण - १९८० - पृ. १०६।

समाज : विवाह - संस्था --

विवाह मानव समाज की आधारभूत संस्था है, जिसके स्वरूप तथा प्रतिमान विभिन्न संस्कृतियों में विभिन्न प्रकार के रहे हैं । समाज जीवन को व्यवस्थित करने के लिए अन्य समाजों ने चाहे कुछ न किया हो, परन्तु इस हेतु विवाह को पध्दति सभी जातियों ने अपनायी है । विवाह स्त्री-पुरुष की आदीम कामभावना को स्वीकृति देता है । व्यक्ति को कामोपभोग की दृष्टि से संयमित तथा नियंत्रित करने के लिए विवाह की आवश्यकता होती है । इस प्रकार व्यक्ति की कामेच्छा पूर्ति के एक व्यवस्थित साधन के रूप में विवाह का प्रयोग आता है ।

विवाह संस्कार विषायक विभिन्न सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्य रहे हैं । इनमें देश और काल के अनुरूप परिवर्तन होता रहा है । आज भी विवाह के संबंध में विविध समाजों में विभिन्न धारणाएँ मिलती है । परन्तु भारत में विवाह को एक महत्वपूर्ण संस्कार माना गया है । वर्तमान समय में विवाह को लेकर दो व्यवस्थाएँ प्रचलित है - एक है परंपरागत व्यवस्था जिसके अपने विशिष्ट मूल्य रहे है । और दूसरी विवाह व्यवस्था पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव की उपज है । अत: इसके अपने पृथक मूल्य है । आज समाज में परंपरागत और आधुनिक वैवाहिक मूल्यों में संघर्ष चल रहा है । इस संघर्ष से आधुनिक वैवाहिक मूल्यों को मान्यता मिल रही है ।

उषा प्रियंवदा आधुनिक युग की लेखिका होने के कारण उन्होंने वर्तमान समाज के विवाह विषायक होनेवाली नयी-पुरानी मान्यताओं को तथा उनके संघर्ष को अपने साहित्य में यथार्थ के धरातल पर चित्रित किया है । उनके

साहित्य के अधिकांश पात्र किसी न किसी रूप से विदेश से संबंधित रहने के कारण पाश्चात्य सभ्यता से अत्याधिक प्रभावित हैं, जिससे उनकी वैवाहिक मान्यताओं पर भी पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है ।

भारतीय परंपरा में विवाह को धर्म से संयुक्त किया जाने के कारण प्रत्येक व्यक्ति के लिए विवाह अनिवार्य माना जाता था । परंपरागत विवाह माता-पिता तथा अभिभावक द्वारा ही निश्चित किया जाता था, अत: परिवार का यह दायित्व रहता था, कि उचित समय में लडके - लडकियों का विवाह करा दें । ' रुकोगी नहीं, ... राधिका ? ' उपन्यास में यह बात दिखाई देती है । राधिका के विवाहयोग्य हो जाने पर उसकी भाभी उसका विवाह कर देना आवश्यक मानती है, अत: अपने इस दायित्व से बेखबर राधिका के भाई और पिता से उन्हें यही शिकायत भी है उनका कहना था, कि पापा और बड दा, दोनों ही अपने अपने कामों में इतने मसरुफ रहते हैं और राधिका बडी होती जाती है, किसी को ख्याल नहीं कि ब्याह शादी की बात करे ।'[१]

' एक कोई दूसरा ' कहानी में भी कहानी की नायिका निलांजना की भाभी उचित समय में निलांजना का ब्याह कर देना चाहती है, वह निलांजना से कहती है -' शादी तो तुम्हारी होनी ही है । समय भी हो गया, बहुत पढ भी लिया । मेरी तो अब यही इच्छा है कि तुम्हारा शीघ्र विवाह हो जायें ।'[२]

' वापसी ' कहानी में भी लडकी के विवाह की चिंता दिखाई दे रही है -- ' गजाधर बाबू खिन्न हो आए । पत्नी की बात का उन्होंने कुछ उत्तर नहीं दिया । उन्होंने मन में निश्चय कर लिया कि बसंती की शादी जल्दी ही कर देनी है ।'[३]

---

१ रुकोगी नहीं,.... राधिका ?' ऊषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, पाँचवा संस्करण - १९८४ - पृ. ४२

२ एक कोई दूसरा - ऊषा प्रियंवदा - द्वि.सं. - १९८६ - अक्षर प्रकाशन, पृ. २३

३ मेरी प्रिय कहानियाँ - ऊषा प्रियंवदा - राजपाल अण्ड सन्स - पृ. ७६

परंपरागत विवाह में व्यक्ति को विवाह के संबंध में चुनाव का विशेष अधिकार प्राप्त नहीं था । परिवार के बुजुर्ग व्यक्तियों द्वारा ही लडके -लडकियों का विवाह निश्चित किया जाने के कारण उनकी निजी मान्यताएँ कोई महत्व नहीं रखती थी ।

परंतु आज यह स्थिति बदल गयी है । आधुनिक शिक्षा, स्वतंत्र चेतना तथा युरोपिय प्रभाव के फलस्वरूप परंपरागत वैवाहिक मान्यताओं में परिवर्तन आने लगा है । आज विवाह के चुनाव के संदर्भ में माता-पिता तथा अभिभावक की मान्यता गौण प्रतित हो रही है तथा लडके - लडकियों के स्वतंत्र इच्छा को ही सर्वोपरि माना जाने लगा है । ` रुकोगी नहीं,.... राधिका ? ` उपन्यास में इस स्थिति का उल्लेख हुआ है । इस उपन्यास में राधिका का बडा भाई विनय अपना विवाह स्वयं निश्चित करता है । वह अपने विवाह के संदर्भ में पिता की राय लेना भी जरुरी नहीं समझाता - ` बड दा का विवाह भी पापा का कराया हुआ नहीं था । इसी तरह उन्होंने भी अचानक सूचना दी थी कि उन्हें एक लडकी पसंद आ गयी है, और वे शीघ्र ही विवाह करना चाहते हैं ।`[१]

आज सिर्फ लडके ही नहीं, बल्कि लडकियाँ भी विवाह चुनाव के संदर्भ में स्वतंत्र विचार रखती है । उषाजी के ` एक कोई दूसरा ` कहानी में इस यह बात दिखाई देती है । इस कहानी की निलांजना अपने विवाह के बारे में स्वतंत्र विचार रखती है । वह एक धनी परिवार की लडकी है, उसके परिवार के लोग भौतिकवादी है । रुपया-पैसा, मोटरें-कोठियाँ, आभूषण आदि में ही वे सुख मानते है । अत: निलांजना का विवाह भी वह ऐसे ही धनी व्यक्ति विजय से करना चाहते हैं, लेकिन निलांजना के अपने स्वतंत्र विचार हैं, वह दाम्पत्य जीवन में धन की अपेक्षा परस्पर स्नेह और प्रेम को अधिक महत्वपूर्ण मानती है । इसीलिए वह विजय से विवाह करने के लिए स्पष्ट रुप से इन्कार कर देती है । विजय के बहन द्वारा दिये आभूषणों का अस्वीकार करते हुए अपनी भाभी से

---

१ रुकोगी नहीं, ... राधिका ? उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, पाँचवा संस्करण - १९८४ - पृ. ४९ ।

कहती हैं - ' यह वापस कर दो भाभी , मैं वहाँ शादी नहीं करूँगी ।' [१]

' रुकोगी नहीं,... राधिका ? ' उपन्यास के राधिका की भी विवाह के संदर्भ में कुछ निजी मान्यताएँ हैं । वह स्वयं विदेश में रहकर आयी है फिर भी उसका विवाह विषयक दृष्टिकोण भारतीय ही है । वह वैवाहिक जीवन में स्थिरता को महत्व देती है । इसीलिए वह अपने जीवन में ऐसे ही साथी की कामना करती है ...' मेरे जीवन में प्ले बॉय के लिए स्थान नहीं है । मैं संगी चाहती हूँ, जिसमें स्थिरता हो, औदार्य हो, जो मुझे मेरे सारे अवगुणों सहित स्वीकार कर ले । मेरे अतीत को झेल ले ।' [२]

भारतीय परंपरा में जातीयता का कड़ा पालन किया जाता था । इसीलिए विवाह में यह आवश्यक माना जाता था कि व्यक्ति का विवाह उसके जाति-बिरादरी के अंतर्गत ही हो । परंतु आज शिक्षा तथा पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण जातियता की भावना नष्ट हो रही है । जिसके फलस्वरूप अंतरजातीय और अंतरधर्मिय विवाह को बढ़ावा मिल रहा है । अंतरजातीय विवाह तो क्या, आज कल अंतरराष्ट्रीय विवाह भी हो रहे हैं । उषाजी के ' सागर पार का संगीत ' कहानी में अंतरराष्ट्रीय विवाह को दिखाया है, इस कहानी की देवयाणी भारतीय युवती है, जो एक कैनेडियन युवक से विवाह करती है । ' चाँदनी में बर्फ पर ' कहानी का हेमन्त भी जो भारतीय है, एक अमरिकी युवती से विवाह करता है ।

हमारे समाज में विवाह के संदर्भ में व्यक्ति के उम्र को लेकर कुछ रूढ़ियाँ और परंपरायें हैं । किसी भी नारी के लिए उससे उम्र में छोटे पुरुष से विवाह करने की बात हमारे समाज में मान्य नहीं है । ' बचपन खम्मे लाल दीवारें'

---

१ 'एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, द्वितीय संस्करण - १९८६ - पृ. २४

२ रुकोगी नहीं,.... राधिका ?' - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, पाँचवा संस्करण - १९८४-पृ. ८२ ।

उपन्यास में इस बात का उल्लेख मिलता है । उपन्यास की नायिका सुषमा, नील नामक युवक से प्रेम करती है, जो उससे आयु में छोटा है । सुषमा इस बात को भली भाँति जानती है, कि हमारा समाज इस विवाह को स्वीकृति नहीं देगा । इसलिए वह अपनी सहेली मीनाक्षी से कहती है --` मैं नील से शादी नहीं कर सकती । मैं पाच साल बडी जो हूँ ।` [१]

आयु के संदर्भ में जहाँ नारी के लिए उससे छोटे उम्रवाले पुरुष से विवाह स्वीकृत नहीं है, वहाँ उससे कापनी बडे पुरुष से विवाह भी मान्य नहीं होता । ` रुकोगी नहीं, ... राधिका ? ` उपन्यास में इस बात का जिक्र हुआ है । इस उपन्यास की राधिका जब यह सुनती है, कि उसके पिता उनकी दूसरी शादी उनसे उम्र में कापनी छोटी युवती, विद्या से करने जा रहे हैं, तो वह उन दोनों की आयु में होनेवाले अंतर को देखते हुए सोचती है --` उसे बार-बार यह आश्चर्य होता कि पापा को विवाह की बात सूझी ही कैसे ? कम से कम बीस वर्ष तो वे बडे होंगे विद्या से और विद्या भी यह जानते हुए कि पापा की बडी-बडी दो संताने हैं, इस विवाह पर ... ` [२] राधिका को पिता के दूसरे विवाह करने पर कोई ऐतराज नहीं है । परंतु उनके और विद्या की अवस्था में होनेवाले कापनी फर्क के कारण उसे यह विवाह स्वीकार नहीं है -` अगर उनकी ( पापा की ) मनोनीता प्रौढा आयु की वात्सल्य से पूर्ण स्त्री होती, तो शायद राधिका उसे स्वीकार भी कर लेती ।` [३]

हमारे समाज में प्रौढावस्था में किये गये विवाह को विस्मय से देखा जाता है ।` कँटीली छाँह ` कहानी में ऐसे विवाह का संकेत मिलता है । इस

---

१ पचपन खम्भे लाल दीवारें - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण - १९८० - पृ. १०५

२ रुकोगी नहीं,... राधिका ?` उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, पाँचवा संस्करण - १९८० - पृ. ४६

३ - वही - पृ. ४६

कहानी का जगत्बाबू पहले तो विवाह करने को राजी नहीं होता, परंतु बार-बार सभी के समझाने पर प्रौढावस्था में अपनी हमउम्र स्त्री के साथ विवाह करता है -` ऐसी शादी राजी को समझ में नहीं आती । साल भर पहले बयालिस साल की उम्र में जगत् बाबू ने अडतीस साल की इंद्रा से ब्याह किया था ...।`[1]

विवाह के लिए समाज में एक निश्चित आयु मर्यादा मानी गई है । अत: यह माना जाता है कि उसी अवधि में ही व्यक्ति का विवाह हो । ` दृष्टिदोष` कहानी लडकी के आयु का संकेत मिलता है -` मुझे याद है ,जब मैं उन्नीस साल की थी, तो मेरे क्या स्वप्न थे, पर बीसवीं लगते ही मेरा शादी हो गई ।`[2] यदि किसी कारणवश इस निर्धारित अवस्था में व्यक्ति का विवाह नहीं हुआ तो, फिर उसका विवाह होना असंभव होता है । ` रुकोगी नहीं,.... राधिका ?` उपन्यास में इस बात का उल्लेख मिलता है -` अक्षय अब कौमार्य की उस अवस्था में पहुँच गया था, जब कि प्राय: जाति-बिरादरी से रिश्ते आने बंद हो जाते हैं ।`[3]

` कोई नहीं ` कहानी में उम्र टल जाने के कारण रह गये विवाह का संकेत मिलता है । इस कहानी की नायिका नमिता अपने भूतपूर्व प्रेमी को अपने अविवाहित रहने का कारण बताते हुए कहती है --` तुम्हारे जाने के बाद दो तीन साल तो मैं ऐसे ही बेजान,सुन्न-सी पडी रही । फिर पाया,कि धीरे धीरे सारे समवयस्कों की शादी हो गयी है । मेरे लिए कोई बैठा रहता, ऐसा था ही कौन । और फिर बस .... ऐसे ही जीवन बीत गया ।`[4]

---

१ जिन्दगी और गुलाब के फूल - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, पाँचवासंस्करण - पृ.१७

२ - वही - पृ.

३ रुकोगी नहीं राधिका ?` उषा प्रियंवदा-अक्षर प्रकाशन,सं.१९८०- पृ.५८

४ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन,द्वि.सं.१९८६ - पृ.५६ ।

प्राचीन काल में विवाह नारियों के लिए आर्थिक सुरक्षा का साधन माना जाता था । नारी विवाह के पूर्व अपने पिता पर और विवाह के पश्चात् अपने पति पर आर्थिक दृष्टि से निर्भर करती थी । लेकिन वर्तमान समय में शिक्षा के प्रसार के कारण नारियाँ नौकरी करने लगी हैं । अत: उसे आर्थिक स्वातंत्र्य भी प्राप्त हुआ है । आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र नारी आज विवाह को आर्थिक सुरक्षा के लिए आवश्यक नहीं मानती । बल्कि एकाकी जीवन में साथी की आवश्यकता के लिए विवाह को अनिवार्य मानती है । प्रियंवदा ने `पचपन खम्भे लाल दीवारें` उपन्यास में इस बात को स्पष्ट किया है । उपन्यास की नायिका सुषमा अपने परिवार के दायित्व के कारण विवाह नहीं कर सकती, परंतु जीवन की एकांतता उसमें निराशा कुंठा, वितृष्णा भर देती है । दूसरी नारी पात्र दुर्गा शास्त्री में भी अविवाहित होने से हीन भाव भर जाता है । जब सुषमा की सहाध्यापिका मीरा धैर, सुषमा को विवाह करने की सलाह देती है, तो सुषमा बात को टालते हुए कहती है -- `अच्छा मीरा दी, आप भी क्या यही मानती हैं, कि विवाह होना ही चाहिए ? मेरे पास तो सभी कुछ है, आर्थिक रूप से स्वतन्त्र जो हूँ, जो चाहे कर सकने में समर्थ हूँ ।` इस पर मीरा धैर विवाह की अनिवार्यता का समर्थन करते हुए कहती है -` फिर तुम कभी-कभी रुकना क्यों उठती हो ? मीनाक्षी, क्यों एक बिजनेसमैन से शादी करने जा रही है जब कि उसने सदा ही एक इन्टलेक्चुअल व्यक्ति की कामना की ? दुर्गा क्यों हर एक को क्रिटिसाइज करती रहती है और उस बिल्ली को कलेजे से लगाये रहती है । ये सब उसी ( विवाह के ) गहरे अभाव के सूचक हैं[1]।` `मोहबंध` कहानी की एक पात्र सुजाता भी नारी के लिए विवाह आवश्यक मानती है । इसीलिए वह अचला को शादी करने की सलाह देते हुए कहती है -- `जिन्दगी बहुत छोटी है, बहुत मूल्यवान है ... भविष्य की ओर देखो, नारी की सृष्टि इसलिए नहीं

---

१ पचपन खम्भे लाल दीवारें - उषा प्रियंवदा - चतुर्थ संस्करण -१९८४ - पृ. ६७ ।

हुई कि वह पुरुषों की समानता कर, लड़कियों को अर्थशास्त्र पढ़ाते-पढ़ाते काट दी जायें ।' [१]

आज का व्यक्ति अधिकाधिक भौतिकवादी हो रहा है । अत: विवाह के संदर्भ में भी भौतिकवादी दृष्टिकोण को ही बढ़ावा मिल रहा है । यही कारण है, कि विवाह में स्नेह, प्रेम की अपेक्षा धन को अधिक महत्व दिया जाने लगा है । आज की नारी भी प्रेम से अधिक जीवन जीने की समस्त सुविधाओं को जुटाने की क्षमता रखनेवाले प्रेमी पर अधिक नजर रखती है । ' मछलियाँ ' कहानी में इस बात का उल्लेख मिलता है इस कहानी को नयनतारा मुखर्जी विवाह चुनाव के संदर्भ में मनीश और नटराजन की आर्थिक क्षमताओं के दृष्टि से तुलना कर अपना मत प्रकट करते हुए विजी से कहती है -- ' और विजी, यदि तुम्हारी जगह मैं होती ,तो दोनों में से नटराजन को ही चुनती । छ: साल से यहाँ ,पीएच.डी है, इण्डिया जाकर जोरदार नौकरी मिलेगी, यहाँ भी आठ हजार तो मिल रहे होंगे । मनीश के पास तो एक टटपुँजिया फेलोशिप ही है ।' [२]

आज के उच्चशिक्षित युवक भी विवाह में दहेज की कामना करते है । ' स्वीकृति ' कहानी का सत्य उच्चशिक्षित होने पर भी अपनी भावी पत्नी के रूप रंग तथा गुणों की अपेक्षा उससे प्राप्त धन की ओर ही अधिक ध्यान देता है । विवाह के संदर्भ में ' पत्नी पढ़ी-लिखी हो और दो टिकटों का प्रबंध दहेज में मिले धन से हो सके, उसकी केवल यही दो माँगे थी ।' [३]

' झूठा-दर्पण ' कहानी की मीरा भी विवाह के लिए धनी व्यक्ति को ही महत्व देती है । मीरा ने स्वयं यति से प्रेम-विवाह किया है । परंतु विवाह के पश्चात् आर्थिक तंगी के कारण उनका वैवाहिक जीवन तनावपूर्ण हो जाता है ।

---

१ मेरा प्रिय कहानियाँ - ऊषा प्रियंवदा - राजपाल एण्ड सन्स - पृ.१००

२ कितना बड़ा झूठ - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन,तृतीय संस्करण-१९७६ - पृ. ११६

३ कितना बड़ा झूठ - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, तृतीय संस्करण - पृ. ८६

इसीलिए वह अपनी सहेली अमृता को विवाह के संदर्भ में राय देते हुए कहती है -- ' ... मैंने जिंदगी को बहुत रोमाण्टिक दृष्टि से देखा था । तुझे यति के तरह के व्यक्ति से विवाह करने की आवश्यकता नहीं, किसी ऐसे पुरुष से कर, जो तुझे धन-दौलत और प्रतिष्ठा दे सके ।'[१]

प्रत्येक युवा व्यक्ति अपने भावी जीवन साथी के संबंध में कुछ कामनाएँ रखता है । ' रुकोगी नहीं,.... राधिका ? ' उपन्यास का अक्षय परंपरागत विचारों का युवक है, अत: वह अपनी भावी पत्नी को परंपरागत गृहीणी के रूप में ही चाहता है -- ' पत्नी मेरे घर में रहेगी, मेरी और बच्चों की देखभाल करेगी और मेरे प्रकाश से आलोकित होगी ।'[२]

' शेषायात्रा ' उपन्यास का प्रणय आधुनिक विचारों का होने के बावजूद भी पत्नी के संदर्भ में होनेवाले उसके विचार परंपरागत ही है -- ' मुझे कॅरियर गर्ल नहीं चाहिए थी, ... मैं चाहता था सरल, स्नेहशील बीवी, जिसके साथ बैठकर मुझे सुख-चैन मिले ।'[३] ' मछलियाँ ' कहानी के मनीश के अपनी पत्नी संबंधी विचार आधुनिक है, इसीलिए वह परंपरागत संस्कारोंवाली अपनी मंगेतर विजी को रिजेक्ट करते हुए कहता है -- ' विजी के लिए मेरे मन में अब कुछ नहीं बचा । वह बहुत सीधी, सरल, अनकाम्प्लिकेटेड लड़की है । मुझे बाँध सके, ऐसे मानसिक गहराइयाँ नहीं हैं उसमें । मुझे पत्नी चाहिए तो मुकी जैसी कलात्मक, स्फूर्तिदायक, इंटेलेक्चुअल ।'[४]

---

१ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, द्वितीय संस्करण - १९८६ - पृ. ४०

२ रुकोगी नहीं,... राधिका ?' उषा प्रियंवदा -अक्षर प्रकाशन, पाँचवा संस्करण - १९८० - पृ. ६८

३ शेषायात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - प्रथम संस्करण - १९८४ - पृ. ४३

४ कितना बडा झूठ - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, तृ.सं. -१९७६ पृ. १०३ ।

परंपरा में प्रेम और विवाह एक-दूसरे से संलग्न रहते थे, अत: यह आवश्यक माना जाता था, कि जिससे प्रेम हो, उसी से विवाह हो । अथवा जिससे विवाह हो, उसी से प्रेम हो ।` रुकोगी नहीं,.... राधिका ? ` उपन्यास के ` अक्षय के लिए परस्पर आकर्षण की परिणति विवाह है ।` [१] उपन्यास का अन्य पात्र मनीश सुखी वैवाहिक जीवन के लिए प्रेम और शारीरिक आकर्षण दोनों को भी महत्वपूर्ण मानता है --` सुखी वैवाहिक जीवन के लिए आदर पर्याप्त नहीं है, उसीतरह जैसे, कि केवल परस्पर शारीरिक आकर्षण भी नहीं ।` [२]

आज विवाह की सफलता,असफलता को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जाँचा-परखा जाने लगा है ।` पचपन खम्भे लाल दीवारें` उपन्यास की सुषमा उसके और नील के विवाह के संदर्भ को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखते हुए यह निष्कर्ष निकालती है --` हमारा विवाह कभी सफल न होगा । मुझे सदा यह विचार डसता रहेगा कि कहीं कोई, बहुत छोटी,बहुत सुंदर लडकी तुम्हें न छीन लें ।`[३] अर्थात् न्यूनगंड की भावना से ग्रस्त व्यक्ति का वैवाहिक जीवन सफल नहीं होता।

` रुकोगी नहीं,.... राधिका ?` उपन्यास की विद्या भी विवाह को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखती है । इसीलिए वह कहती है --` यह प्राय: देखा गया है कि जो लडकियाँ इलेक्ट्रा काम्प्लेक्स से ग्रसित होती हैं, वे विवाह करके सुखी नहीं होतीं ।`[४] न्यूनगंड के कारण जहाँ विवाह सफल नहीं होता, वहीं अहंगंड से भी विवाह सफल नहीं होता । अर्थात् विवाह के दोनों के मन में भी समभावना की आवश्यकता है ।

वर्तमान अर्थ व्यवस्था, औद्योगिक-क्रांति,नारी-जागरण और शिक्षा के

---

१ रुकोगी नहीं,.. राधिका ?` उषा प्रियवंदा-अक्षर प्रकाशन, पाँचवा संस्करण - १९८० - पृ.६१

२ -- वही - पृ.८७

३ पचपन खम्भे लाल दीवारें - उषा प्रियवंदा - राजकमल प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण - १९८० - पृ.१११

४ रुकोगी नहीं,... राधिका ?` उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, पाँचवा संस्करण - १९८० - पृ.९१ ।

प्रभाव ने आज वैवाहिक मूल्यों को नये आयाम दिये हैं । स्वच्छन्दता एवं व्यक्तिवादी जीवन दर्शन ने विवाह की परंपरागत धारणा को आमूल परिवर्तित कर दिया है । जिसके परिणाम स्वरूप आज के युवावर्ग में विवाह-संस्था के प्रति अनास्था के दर्शन हो रहे हैं ।

परंपरागत हिंदू समाज में विवाह को धर्म से संयुक्त माना जाने के कारण विवाह संस्कार के प्रति लोगों के मन में आस्था थीं । अत: तब विवाह को एक अटूट बंधन माना जाता था । ' शेषायात्रा ' उपन्यास की अनुका परंपरागत भारतीय नारी है, इसीलिए उसमें विवाह संबंध के प्रति अटूट विश्वास है, वह कहती है -- ' पेड-पौधे मरते हैं, जीव-जन्तु भी, आदमी-औरतें भी, कहां मैरिज भी मरा करती है, खासतौर से हिंदुस्तानी मैरिज ।'[१] आज परंपरागत विवाह की यह मान्यता टूटने लगी है । आज के नवविचारों के युवावर्ग में परंपरागत विवाह के प्रति अनास्था दिखाई देती है । ' रुकोगी नहीं,... राधिका ?' उपन्यास की राधिका आधुनिक विचारों की युवती है । उसके मन में परंपरागत विवाह के रस्मों-रिवाजों के प्रति अनास्था है । साथ ही वह कापली स्वच्छन्द होने से सभी उसे संदेह की दृष्टि से देखते हैं । अत: उसके मन में अपने विवाह को लेकर दुविधा रहती है । वह सोचती है ' तब विवाह ? पर उसे अब स्वीकारेगा भी कौन, न वही किसी अनजान पुरुष से सप्तपदी की रस्म पूरी करवा कर पत्नी बनना पसंद करेगी ।'[२]

' शेषायात्रा ' उपन्यास का प्रणव भी परंपरागत विवाह को एक रिस्क मानता है । उसके अनुसार -' ऐसी शादियाँ हमेशा रिस्क होती हैं, एक छोटी-सी मुलाकात, सिर्फ चेहरा देखकर पसंद कर लेना, आगे स्वभाव कैसा निकलेगा पटेगी या नहीं, यह सब कहना बडा मुश्किल होता है ।'[३]

---

१ . शेषायात्रा - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण - १९८० - पृ. ६४

२ रुकोगी नहीं,.. राधिका ? - ऊषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, पाँचवा संस्करण -१९८० - पृ. ३६

३ शेषायात्रा - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन.प्र.सं.-१९८४ - पृ.९३

'झूठा दर्पण' कहानी की अमृता भी विवाह में विश्वास नहीं करती। इसीलिए जब उसकी सहेली उसे विवाह करने की राय देती है तो वह कहती है -- 'ऐसे संबंधों पर मेरी आस्था नहीं, रही मीरा। विवाह बहुत कुछ माँगता है, मुझमें न कोई चाव बचा है, न अरमान। ऐसी ही रहती आयी हूँ - ऐसे ही रहूँगी। अब इस आयु में मुझसे दुल्हन नहीं बना जायेगा।'[1] 'शेषयात्रा' उपन्यास की अनु के अनुसार -'रस्मअदाई से न तो विवाह होते हैं, न तलाक। दिल की एक अपनी गति होती है, भावनाएँ, अनुभूतियाँ उगती हैं, पनपती हैं, फिर उन्हें सूखने में भी समय लगता है।'[2] 'प्रतिध्वनि' कहानी में भी विवाह की टूटती आस्था के दर्शन होते हैं। इस कहानी की वसु अपने पति से संबंध - विच्छेद कर लेने पर कहती है -...' एक तरह से अच्छा ही हुआ। एक 'मीनिंगलेस सी रस्म' ने हमें बाँध दिया था। अब हम दोनों ही मुक्त हैं।'[3]

आज स्त्री-पुरुष विवाह के बिना भी एक-दूसरे से संबंध स्थापित कर रहे हैं, अत: वह विवाह को आवश्यक नहीं मानते। 'शेषयात्रा' उपन्यास में यह स्थिति दिखाई देती है। इस उपन्यास की नमिता अपने पति के मृत्यु के पश्चात् प्रणव से संबंध स्थापित करती है। प्रणव जब उसके शादी का प्रस्ताव रखता है, तो वह कहती है --'जो शादी हुई थी वही नहीं निभ पायी - नही मुझे शादी की जरुरत नहीं लगती।'[4]

---

१ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, द्वितीय संस्करण - १९८६ - पृ. ४०

२ शेषयात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण - १९८४ - पृ. ८३

३ कितना बड़ा झूठ - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, तृ. सं. १९७६-पृ. २७

४ शेषयात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - चतुर्थ संस्करण - १९८४ - पृ. १०७

वर्तमान युग में विवाह को एक समझौते अथवा मैत्री-संबंध के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है । `रुकोगी नहीं,... राधिका ?` उपन्यास का मनीश भी विवाह को एक मैत्री-संबंध के रूप में ग्रहण करता है । इसीलिए वह राधिका के सामने विवाह का प्रस्ताव रखते हुए कहता है --` न, कुछ मत कहो । मैं चाहता हूँ, कि तुम समय लेकर सोचो, राधिका । हम दोनों में एक सख्य भाव है, हमारे संबंधों में एक सहजता । मैं तुम्हें पूर्णरूप से स्वीकार करूँगा , तुम्हारे मुझ, तुम्हारी समस्याओं, तुम्हारे विगत सहित ?` [१]

` शेषायात्रा` उपन्यास में भी अनु का दीपांकर से पुनः विवाह एक समझौते के रूप में दिखाई देता है -` दीपांकर उसे हर तरह से सुखी रखने की कोशिश करेगा, वह यह जानती थी, वह अपने लिए महत्वाकांक्षी नहीं था, पर अनु को वह कभी कोई निर्णय लेने से नहीं रोकेगा । यह होगी बराबर की साझेदारी , न कोई बडा, न छोटा, न सुपीरियर न इन्फीरियर ।` [२]

सुश्री ऊषा प्रियंवदाजी के कथात्मक साहित्य में प्रतिबिंबित विवाह के चित्रण को देखते हुए हम कह सकते हैं, कि आज विवाह का परंपरागत दृष्टिकोण अब बदल गया है । विवाह का आधार अब प्रेम या युग युग के संबंध की आस्था नहीं है, अपितु उसे मात्र एक सामाजिक समझौता, साथ रहने भर की आवश्यकता समझा जा रहा है । इतना ही नहीं तो आज विवाह को निरर्थक भी समझा जा रहा है । परंतु विवाह के प्रति व्यक्ति चाहे अविश्वास तथा अनास्था प्रकट करे फिर भी विवाह संस्था का पूर्णतः उल्लंघन नहीं कर सकता ।

---

१ `रुकोगी नहीं,.... राधिका ? ऊषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, पाँचवा संस्करण-१९८०-पृ.१३२

२ शेषायात्रा - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन- प्रथम संस्करण - १९८४ - पृ.१३५ ।

समाज : स्त्री-पुरुष संबंध ---

सामाजिक सम्बन्धों का ताना-बाना ही समाज है । अर्थात् व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अन्य व्यक्तियों से संबंध स्थापित करता है । मानवीय संबंधों का क्षेत्र विशाल है । परन्तु मानव के सभी प्रकार के संबंधों में स्त्री-पुरुष संबंध ही प्राथमिक और महत्वपूर्ण है, क्योंकि स्त्री-पुरुष संबंध पर ही समाज की अन्य दो महत्वपूर्ण संस्थायें विवाह तथा परिवार निर्भर रहती है । इस दृष्टि से स्त्री-पुरुष संबंधों का स्वरूप सम्पूर्ण समाज को प्रभावित करता है ।

स्त्री-पुरुष के बीच का नाजुक रिश्ता सृष्टि के आरंभ से चला आ रहा है । उसमें समयानुसार परिवर्तन भी होते रहे हैं, परंतु यह परिवर्तन आपसी सामंजस्य अपनी अपनी वैयक्तिक जिम्मेदारियों के साथ - साथ सामाजिक परिवेश की भावना का सम्मान करते हुए, भविष्य के लिए क्या नैतिक मूल्यों की स्थापना करना है, आदि को दृष्टि में रखकर ही हुए हैं । लेकिन आज आधुनिक मूल्यों , यांत्रिक होते स्त्री-पुरुष संबंधों ,यौन के नये पर्याय, अपनी पहचान बनाने की कोशिश और उसके खो जाने का डर इन संबंधों को नया आयाम दे रहा है ।

सुश्री ऊषा प्रियंवदाजी ने स्त्री-पुरुष संबंधों को आधार बनाकर ही अधिकांश साहित्य का सृजन किया है, अत: उनकी कृतियों में नयी जीवन दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में स्त्री-पुरुष संबंधों की बदलती हुई मान्यताओं का सक्षम चित्रण मिलता है ।

भारतीये समाज में स्त्री-पुरुष संबंधों को लेकर अनेक कडी मान्यतायें रूढ रही है, जिसमें स्त्री-पुरुष के विवाहपूर्व संबंध को निषिध्द माना गया है । यही कारण है, कि विवाहपूर्व संबंध रखनेवाले स्त्री-पुरुषों का समाज विरोध करता है ।

प्रियंवदाजी ने अपने पचपन खम्भे लाल दीवारें उपन्यास में ऐसे ही प्रेम संबंध को दिखाया है, जो सामाजिक विवशताओं के कारण असफल होता है । उपन्यास की नायिकासुषमा का नील नामक युवक से प्रेमसंबंध है । अत: उन दोनों

एक-दूसरे से मिलना जुलना रहता है । परंतु उनका यह प्रेम समाज को स्वीकृत नहीं होता, इसीकारण सुषामा को अनेक कटू आलोचनायें सहनी पडती हैं । फिर भी वह उस ओर ध्यान नहीं देती । लेकिन अंत में सुषामा की सहाध्यापिकायें प्रिन्सिपल से उसकी रिपोर्ट कर उसे अनैतिक आचरण के लिए उत्तरदायी ठहराती हैं, जिससे सुषामा के सामने उसके नौकरी के अस्तित्व का प्रश्न खडा रहता है । अत: विवश होकर उसे नील से होनेवाले प्रेमसंबंध समाप्त करने पडते हैं ।

' रुकोगी नहीं,.... राधिका ? ' उपन्यास में भी विवाहपूर्व प्रेमसंबंधों का चित्रण मिलता है । इस उपन्यास की नायिका राधिका एक विदेशी पत्रकार के साथ एक वर्षा अमरिका में रहकर भारत लौटी है । यह हमारे समाज के लिए विस्मय की बात है । अत: सभी लोग उसे संदेह की दृष्टि से देखते हैं। भारत आनेपर फिर उसके जीवन में अक्षय और मनीश नामक दो युवक आते हैं । अक्षय राधिका के प्रभावी व्यक्तित्व से उसकी ओर आकर्षित होता है। परंतु वह रूढिवादी विचारों का होने के कारण राधिका को उसके अतीत सहित स्वीकारने का साहस नहीं रखता । अत: वह दूसरे शहर जाकर एक प्रकार से राधिका को भूला देता है । मनीश भी राधिका को चाहता है । परंतु प्रारंभ में राधिका उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होते हुए भी उसके स्वच्छन्द और अस्थिर प्रकृति को जानते हुए, उस पर विश्वास नहीं करती । परंतु अंत में वह उसी के साथ जाना ही स्वीकार करती है ।

विवाहपूर्व स्त्री-पुरुषों के यौनसंबंधों को तो भारतीय समाज में और भी बडा अपराध माना जाता है । ऊषा जी के ' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास में यह बात दिखाई देती है । इस उपन्यास की एक पात्र स्वाती सेन अवैध संबंधों से विवाहपूर्व गर्भधारण करती है, तथा बाद में समाज के भय से आत्महत्या करने की कोशिश करती है ।

' संबन्ध ' कहानी में भी एक ऐसा ही प्रसंग दिखाई देता है । इस कहानी की एक पात्र सुनीता कपूर शिक्षा के लिए अमरिका गई हुई एक भारतीय लडकी है, जो परिस्थितियों में फँसकर गर्भवती होती है । बच्चे का पिता उसे छोडकर चला

जाता है । साथ ही उसके भारतीय परिवारवाले और मँगेत्तर उसे भारत लौट आने के लिए जोर देने लगते हैं । अत: वह घबराकर अबॉर्शन करना चाहती है । और इसी लिए वह कहानी की नायिका श्यामला से मदद चाहती है। परंतु श्यामला ऐसी मदद के लिए तैयार नहीं होती । अत: वह अपने भारतीय समाज से डरकर आत्महत्या कर लेती है ।

भारतीय समाज में स्त्री-पुरुष संबंधों में विवाहित पति-पत्नी का स्वरूप ही आदर्श माना गया है । आदर्श पति-पत्नी हमेशा एक-दूसरे के सुख:ख का खयाल रखते हैं । प्रियंवदाजी के 'एक कोई दूसरा' कहानी में डॉ. कुमार और उनकी पत्नी के द्वारा आदर्श दाम्पत्य जीवन को दिखाया गया है -- 'मिसेज कुमार के लिए उनके वयस्क पति एक अबोध शिशु की तरह हैं, जिनका हर काम बिना कहे ही संपन्न होता है, वे दोनों जीवन के उस मोड पर पहुँच गये हैं, जहाँ पारम्पारिक प्रेम का वेग मंथर गति से बहती नदी में बदल गया है । उसमें ठहराव है, यह उनकी गहराई का प्रमाण है ।' [१]

आज व्यक्तिवादी विचारप्रणाली के परिणाम स्वरूप पति-पत्नी अपने परंपरागत रूप को छोडकर अधिकाधिक 'व्यक्ति' होते जा रहे हैं । आज की नारी प्राचीन नारी की भाँति त्याग तथा तप का जीवन व्यतित न कर अपने व्यक्तिगत सुख की आकांक्षा अधिक रखने लगी है । 'वापसी' कहानी में यह बात दिखाई देती है । इस कहानी के गजाधरबाबू सेवानिवृत्ति के बाद अपने परिवार के साथ रहने लगते हैं । लेकिन अपने परिवार में वह स्वयं को असंगत और अजनबी महसूस करते हैं । खुद को परिवार में एडजस्ट न कर पाने के कारण वह परिवार को छोडकर देने का निर्णय लेते हैं और चाहते हैं, कि उनकी पत्नी उन्हें साथ दे । इसीलिए वह उसे अपने साथ चलने के लिए कहते हैं । परंतु उनकी पत्नी, पति के सुख की अपेक्षा अपने सुख की ओर अधिक ध्यान देती है । इसी कारण वह यह कहकर - 'मैं चलूँ तो यहाँ का क्या होगा ? इतनी बडी गृहस्थी, फिर सयानी लडकी...' [२]

---

१ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, द्वितीय संस्करण - १९८६ - पृ. २० ।

२ मेरी प्रिय कहानियाँ - उषा प्रियवंदा - राजपाल एण्ड सन्स, प्र.सं. १९७४ पृ. ८२ ।

बात को टाल देती हैं ।

वर्तमान समय की बदलती हुई परिस्थितियों और आधुनिक जीवन की विभिन्न समस्याओं के कारण आज परंपरागत दाम्पत्यजीवन के आदर्शों में दरारें पड रही हैं । पति-पत्नी के तनावपूर्ण संबंधों के कारण परस्पर प्रेम और निष्ठा की भावना लोप हो रही हैं । नारी-स्वातंत्र्य के प्रसार के कारण आज की आधुनिक नारी घर की चार दीवारी में रहना पसंद नहीं करती, नारी को यह स्वच्छन्दता पुरुषा वर्ग सह नहीं पाता । परिणामस्वरूप पति-पत्नी के संबंधों में तनाव निर्माण होता हैं। ऊषाजी के ' मोहबन्ध ' कहानी में यह स्थिति दिखाई देती हैं । इस कहानी की नीलू और राजन दोनों पति-पत्नी हैं । नीलू अत्याधुनिक विचारों की नारी होने के कारण घर में बंद होकर रहना नहीं चाहती, अत: वह अधिकांश समय किसी न किसी कारणवश घर से बाहर रहती हैं । जिससे उसका पति राजन अपने को अकेला और गौण महसूस करने लगता हैं । वह नीलू की मित्र अचला से कहता हैं -- ' अब मैं सिर्फ वह व्यक्ति हूँ जो उसे शान-शौकत में रख सकता हैं । मेरा काम तो बस उसके नाम आए लैटर बिल चुकाना हैं । मैं उसके जीवन में गौण हो गया हूँ ।'[१] परिणाम स्वरूप वह अपने अकेलेपन से ऊबने के लिए नीलू की मित्र अचला की ओर आकर्षित होता हैं ।

सुश्री ऊषा प्रियंवदाजी ने अपनी अधिकांश कृतियों में पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से स्त्री-पुरुष संबंधों में आई उन्मुक्तता का चित्रण किया हैं । उनकी विदेशी पृष्ठभूमिपर लिखी गई रचनाओं में स्त्री-पुरुष संबंधों का स्वच्छन्द रूप दिखाई देता हैं । इसका कारण यह हैं कि पाश्चात्य देशों में स्त्री-पुरुष संबंधों के संदर्भ में हमारे देश की अपेक्षा अधिक स्वतंत्रता रही हैं । ' रुकोगी नहीं,... राधिका ? ' उपन्यास का एक अमेरिकन पात्र रॉडनी इस बात को स्पष्ट करते हुए कहता हैं -' हमारी सभ्यता में स्त्री-पुरुष की मैत्री बहुत नैसर्गिक ,अकृत्रिम समझी जाती हैं । यह जीवनसाथी चुनने की एक पध्दति हैं ।'[२]

---

१ मेरी प्रिय कहानियाँ - ऊषा प्रियंवदा - राजपाल एण्ड सन्स, प्रथम संस्करण - १९७४ - पृ. १०७

२ रुकोगी नहीं,... राधिका ? - ऊषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - पाँचवा संस्करण १९८० - पृ. ९५

पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित नारी आज अपने घर, गृहस्थी, पति बच्चों में संतुष्ट नहीं है, इससे परे भी उसकी कोई और चाह है। 'शेषयात्रा' उपन्यास की विभा के अनुसार -' अच्छे घर, मियाँ, और बच्चों के बावजूद भी तो एक औरत को कुछ खाली खाली लग सकता है।'[१] स्त्री-पुरुष संबंधों की स्वतंत्रता के बारे में वह कहती है -- ' एक आदमी प्रेमिका भी रख सकता है, बीवी भी।'[२]

प्रियंवदाजी के 'चांदनी में बर्फ पर' कहानी में स्त्री-पुरुष संबंधों को भारतीय और पाश्चात्य सभ्यता के अनुरूप दो पृथक मान्यताओं को दिखाया गया है। कहानी का नायक हेमंत की पत्नी मीरा (मेरी)अमेरिकन है। अत: अपनी सभ्यता के अनुरूप वह काफी स्वतंत्र है। मीरा का अत्याधिक स्वतंत्र रहना हेमंत को पसंद नहीं है। साथ ही उसके आचरण को लेकर उसके मन में संदेह सा होने लगता है, परंतु वह मीरा से खुलकर बात भी नहीं कर सकता। परिणाम स्वरूप उन दोनों के संबंधो में तनाव की स्थिति निर्माण हो जाती है --' दोनों के बीच सहज आलाप का जो निर्बाध स्रोत था, अचानक ही चुक गया है। पति - पत्नी हैं, इसलिए साथ रहते हैं, पर हेम में एक अंगानापन सा घर करता जा रहा है।'[3] अत: वह अपनी उदासी और जडता से उबरने के लिए अपनी भूतपूर्व प्रेमिका कल्याणी, जो अब किसी और की विवाहिता है, से पुन: संबंध स्थापित करना चाहता है। परंतु कल्याणी चूँकि भारतीय नारी है और सतीत्व में विश्वास करती है, इसलिए हेमंत के प्रस्ताव को ठुकरा देती है। दूसरी ओर मीरा का मित्र पियेर भी मीरा से उसके पति हेमंत की अनुपस्थिति में मिलने को कहता है और मीरा अत्यंत सहजता से उसे मिलने की स्वीकृति देती है। यहाँ कल्याणी भारतीय

---

१ शेषयात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - प्र.सं. १९८४ - पृ.११

२ - वही - पृ. २१

३ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, द्वितीय संस्करण - १९८६ - पृ.१०८

सभ्यता का तो मीरा (मेरी) पाश्चात्य सभ्यता का प्रतिनिधित्व करती है। भारतीय सभ्यता में विवाहोपरान्त पति-पत्नी का एक-दूसरे के साथ एकनिष्ठ रहना अनिवार्य माना जाता है। विशेषत: रूप से नारियों के लिए उनके सतीत्व और पातिव्रत्य की रक्षा करना महत्वपूर्ण माना जाता है। जब कि पाश्चात्य सभ्यता में ऐसा कोई निर्बन्ध नहीं है। इसीकारण वहाँ छोटी-छोटी बातों की वजह से भी पति-पत्नी में संबंध - विच्छेद किया जाता है। भारतीय लोगों के लिए यह बात विस्मयजनक है। `रुकोगी नहीं,... राधिका ?` उपन्यास की राधिका अमरीका जाने के पूर्व जब डैन से उसकी पत्नी का उसे छोड जाना और फिर उनके तलाक की बात सुनती है तो उसे भी आश्चर्य होता है - `राधिका कई दिन इन संबंधों पर सोचती रही। कैसा होगा वह देश, जहाँ लोग इतनी आसानी से साथी बदल देते हैं। क्या रिक्ति हृदय में कचोटती नहीं रहता।`[1]

`शेषायात्रा` उपन्यास में भी स्त्री-पुरुष संबंधों का भारतीय तथा पाश्चात्य मान्यताओं के आधारपर टकराव दिखाई देता है।

आज की कामकाजी नारी घर से बाहर आकर एकाधिक पुरुषों के संपर्क में आने के कारण अब तक पुरुष जिस विवाहेत्तर प्रेम को मात्र अपना अधिकार समझता था, वह स्त्री की पहुँच में आ गया। यदि नारी घर में संतुष्ट नहीं है, तो उसे यह स्वाभाविक अवसर मिल जाता है, कि वह किसी अन्य पुरुष की ओर आकर्षित हो।

प्रियंवदाजी की `स्वीकृति` कहानी में यह स्थिति दिखाई देती है। कहानी की नायिका जया उसके पति सत्य से इसलिए असंतुष्ट है, कि सत्य जया

---

[1] `रुकोगी नहीं,... राधिका ?` - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - पाँचवा संस्करण - १९८० - पृ. ३० ।

की भावनाओं और इच्छाओं की कद्र न कर उसे केवल अपनी उन्नत्ति की सहायक मानता है । इसीकारण जया को अपनी अनिच्छा के बावजूद भी सत्य की इच्छापूर्ति के लिए नौकरी करनी पडती है । जिससे जया के मन में सत्य के प्रति एक आक्रोश सा रहता है । तभी उसका परिचय वाल नामक एक अमेरिकन युवक से होता है । वाल जया को चाहता है । और जया भी अपने पति से संतुष्ट न होने के कारण वाल की ओर आकर्षित होती है । परंतु अंत में उसका पति सत्य उसे अपने मधुर व्यवहार से मना लेता है । और फिर उन दोनों के संबंध सहज हो जाते है ।

वर्तमान युग में मनोविश्लेषण और साम्यवाद के कारण स्त्री-पुरुष के आकर्षण को स्वाभाविक माना जाने लगा है । जिसके कारण समाज में एक ओर यौन वर्जनाओं का निषेध मिलता है, तो दूसरी ओर जीवन को पूरी ईमानदारी से जीने की सहज दृष्टि का विकास हुआ है । आज व्यक्ति अपनी यौनेच्छा की पूर्ति दो रूपों से करता है, एक दाम्पत्यगत सीमाओं में और दूसरे इन सीमाओं के बाहर, यौन मुक्ताचार अथवा यौन स्वतंत्रता के रूप में । दाम्पत्यगत जीवन में भी नारी का मन पूर्ण काम-सुख भोगने के लिए ललकता रहता है । किंसले रिपोर्ट आदि कामशास्त्रीय और विभिन्न समाजशास्त्रीय अध्ययन से यह सिध्द हो चुका है, कि अनेक विवाहित महिलाएँ पूर्ण काम-सुख से वंचित रहती है ।[1] वे पूर्ण शरीरसुख के लिए कसमसाती है, किन्तु गृह-स्वामिनी और आदर्श पत्नीत्व का लबादा ओढे वह खुले आम किसी अन्य व्यक्ति से शरीर-संबंध स्थापित नहीं कर सकती । अत: वह अपने पति से छिपकर किसी व्यक्ति से शरीर संबंध स्थापित कर अपनी यौनेच्छाओं की पूर्ति करती है ।

---

१ प्रमिला कपूर - विवाह-सेक्स और प्रेम - उद्धृत - समकालीन कहानी : युगबोध का संदर्भ - डॉ.पुष्पपाल सिंह - नेशनल - पब्लिशिंग हाऊस - प्रथम संस्करण - १९८६ - पृ.१७५ ।

उषा जी की 'कितना बडा झूठ' कहानी में यह स्थिति दिखाई देती है। इस कहानी की किरन अपनी यौनेच्छा पूर्ति के लिए विवाहबाह्य संबंध रखती है। वह अपने पति विश्वेश्वर के परोक्ष मैक्स नामक युवक से शरीर संबंध स्थापित कर अपने यौन तृषा की तृप्ती करती रहती है। इसीलिए जब उसे मैक्स के विवाह का पता चलता है, तो उसे सबसे अधिक दु:ख मैक्स के स्पर्श से वंचित रह जाने का होता है। एक विवाहिता नारी होने के कारण वह मैक्स के प्रति मन में उठनेवाले क्रोध, दु:ख, ग्लानी आदि भावनाओं को प्रकट भी नहीं कर सकती। अत: अंदर से अस्वस्थ होने पर भी वह पति के साथ एक आदर्श पत्नी जैसा व्यवहार करती है। यहाँ पति-पत्नी संबंधों के परंपरागत मूल्य में आया परिवर्तन दिखाई देता है। हमारी परंपरा में दाम्पत्यगत जीवन का मूलाधार प्रेम और विश्वास माना गया है, परंतु आज इसकी जगह झूठ और फरेब ले रहा है।

'ट्रिप' कहानी में भी नारी के यौन-स्वच्छन्दता का एक रूप दिखाई देता है। इस कहानी की नायिका को अपने पति से 'रोमांस के कमी' की शिकायत है। अत: वह अपनी अतृप्त कामभावना की तृप्ति के लिए एकाधिक पुरुषों से यौन-संबंध रखती है। इन अस्थायी यौन-संबंधों का अंत बडा ही अपमानजनक होता है, फिर भी वह कुछ ही दिनों में पहले अपमान को भूलकर फिर से नया संबंध स्थापित करने को उद्यत रहती है -- 'ताज्जुब है, रोमांस चुक जाने पर लोग एक-दूसरे को किस - किस नाम से पुकारने पर उतर आते हैं। पर उसे गाली बकना भी नहीं आता। हर अंत के बाद हफ्तों घर में बंद, चुपचाप पडी रहा करती थी। फिर अचानक कहीं, किसी जगह, किसी नये व्यक्ति से मुलाकात हो जाती और फिर एक बार वह सारी पुरानी इन्सल्ट भूल जाती।[१]' पत्नी की इस गतिविधि का पता चल जाने पर भी उसके पति उसे पत्नी रूप में रख लेते हैं। उनकी केवल दो शर्तें होती हैं -- एक, वह अपने अफेयर चुपचाप कन्डक्ट करे और दूसरे, इस आयु में वह नये बच्चे की जिम्मेदारी न लेगी इसका

---

१ कितना बडा झूठ - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, तृतिय संस्करण - १९७६ - पृ. ५८ ।

ख्याल रखे ।

आज अस्तित्ववादी विचारधारा के प्रभाव से प्रत्येक व्यक्ति अपने को खोजकर, अपनी पहचान बनाना चाहता है । इसलिए वह सभी बंधनों से मुक्त होकर स्वच्छन्द रहना चाहता है । आज व्यक्ति अपने को पाने के लिए वैवाहिक बंधनों को भी तोड रहा है । प्रियंवदाजी की ' प्रतिध्वनी ' कहानी में यह स्थिति दृष्टिगोचर होती है । कहानी की नायिका वसु को उसके पति श्यामल अत्याधिक प्यार करते थे, परंतु उसे ... ' वह प्यार नागपाश-सा लगता था । उसे वह बंधन जानकर छटपटाती थी । मुक्त होना चाहती थी । अपने को खोजना चाहती थी । श्यामल की पत्नी होने के संदर्भ से कटकर जानना चाहती थी, कि वह असलियत में क्या है ।'[१] इसीलिए वह अपने पति श्यामल को छोडकर उन्हीं के नीचे काम करनेवाले पोस्ट-डाक्टोरल फेलो के साथ चली जाती है । अत: उसके पति श्यामल उसे तलाक देते हैं । वैवाहिक बंधन से मुक्त होने के पश्चात् यौन मुक्ताचार उपभोग करते हुए वह एकाधिक पुरुषों के संपर्क में आती है । और उसी में वह सुख भी अनुभव करती है -- ' कितने मादक थे, वे अस्थायी संबंध- नलिन, घटनायक, विंस .... ।'[२]

इसके अतिरिक्त प्रियंवदाजी के ' झूठा दर्पण ', ' टूटे हुए कहानियाँ तथा ' शेषायात्रा ' उपन्यास में भी परिवर्तित स्त्री-पुरुष संबंधों का चित्रण मिलता है ।

बदलती हुई सामाजिक स्थिति में स्त्री-पुरुष संबंधों के बीच आज कुछ ऐसे संबंध भी दिखाई देते हैं, जिन्हें सामाजिक संबंधों की परिभाषा में रखा

---

१ कितना बडा झूठ - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, तृतीय संस्करण- १९७६ - पृ. ३५ ।

२ कितना बडा झूठ - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, तृतीय संस्करण - १९७६ - पृ. ३४ ।

नहीं जा सकता, न वे प्रेमी-प्रेमिका होते हैं, न पति-पत्नी, न भाई-बहन अथवा और कुछ । प्रियंवदाजी की रचनाओं में भी कुछ ऐसे बेनाम संबंध दिखाई देते हैं । उनके ' एक कोई दूसरा ' कहानी में नायिका निलांजना और उसके गुरु डॉ.कुमार के बीच एक ऐसा ही बेनामी रिश्ता दिखाई देता है । निलांजना के मन में अपने गुरु के प्रति ना केवल आदर है और ना ही केवल प्यार । उनके प्रति उसके मन में जो कोई भावना है, उसे स्वयं भी परिभाषित नहीं कर सकती । वह कहती है - ' मैं डॉक्टर कुमार को प्यार नहीं करती । यह शब्द बहुत संकुचित है । उनके लिए जो कुछ मेरे हृदय में है, वह बहुत अधिक व्यापक, बहुत विस्तृत, बहुत गहरा है । ' वह आगे कहती है -- ' क्या यह अनिवार्य है, कि एक पुरुष और स्त्री में एक ही प्रकार का संबंध हो ? '[1]

' सम्बन्ध ' कहानी में भी एक ऐसा ही अनोखा रिश्ता श्यामला और सर्जन के बीच दिखाई देता है । श्यामला अपने परिवार को छोडकर अलग, स्वतंत्र रूप से रहती है। वह अपना जीवन मुक्त और स्वतंत्र रूप से जीना चाहती है, इसीलिए वह किसी भी बंधन में बँधना नहीं चाहती । सर्जन को श्यामला से प्यार है और वह चाहता है, कि श्यामला अपना वैरागीपन छोडकर स्वाभाविक रूप से जीये । श्यामला को अपनाने के लिए वह अपने घर-बार, बीवी बच्चों को भी छोडने के लिए तैयार है, परंतु श्यामला इस बात को नहीं मानती, वह उसे कहती है -- ' क्या हम ऐसे ही नहीं रह सकते प्रेमी, मित्र, बन्धु । क्या वह सब छोडना जरूरी है ? मैं तो कुछ नहीं माँगती । ' श्यामला किसी से भी बँधना नहीं चाहती । उसकी शर्त केवल यही है कि वे दोनों एक दूसरे पर प्रतिबंध नहीं लगायेंगे, कोई डिमांड नहीं करेंगे, दोनों में से कोई भी एक-दूसरे के प्रति जिम्मेदार न होगा ।'[2]

---

१ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, दि.सं. - १९८६- पृ. २९-३० ।

२ कितना बडा झूठ - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - तृतीय संस्करण - १९७६ - पृ. १३

`शेषायात्रा` उपन्यास में भी प्रणव और नमिता के बीच जो रिश्ता है, उसे परिभाषित नहीं किया जा सकता । वह न प्रेमी-प्रेमिका है, न पति - पत्नी और ना ही उन्हें किसी अन्य रिश्ते में परिभाषित किया जा सकता है । इस रिश्ते के संदर्भ में प्रणव कहता है -- ` जिन्दगी में सिर्फ एक ही रिश्ता नहीं होता - पति-पत्नी का । स्त्री-पुरुष संबंधों के अनेक पहलू होते हैं, जैसे उसका नमिता से संबंध, जो न युवा थी, न सुंदर, एक पढी-लिखी समझदार और परिपक्व स्त्री, जो कि जिंदगी में गये खतरे लेने को तैयार थी, उसका मूल्य भी चुकाने को ।` [१]

व्यक्ति स्वातंत्र्य के प्रभाव के कारण आज की नारियाँ अपने को पुरुषों के समकक्ष मानने लगी हैं । पुरुषों को भी नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व को मान्यता देनी पडी है, जिसके कारण आज स्त्री-पुरुषों में समानता की भावना पनप रही है । वर्तमान युग में जहाँ नारियाँ अर्थार्जन कर पुरुषों को सहयोग देती हैं, वहाँ पुरुष भी उसे गृह-कार्यों में सहयोग देने लगा है । `शेषायात्रा` उपन्यास में नीरजा और उसका पति आलोक में यह साँझेदारी दिखाई देती है । नीरजा को बच्चा हो जाने पर आलोक डेढ महीने की मॅटर्निटी लीव लेकर बच्चे की देखभाल करता है । इस संदर्भ में आलोक कहता है -- ` हर इण्टेलिजेण्ट इन्सान कोई भी काम कर सकता है । फिर हमारी तो पार्टनरशिप है। नीरजा ने बच्चे को जन्म दिया, उसे पालने की ज्यादा जिम्मेदारी मेरी होनी चाहिए न ? ` [२] इसी उपन्यास की दिव्या और उसके पति जयंत में भी साझेदारी दिखाई देती है । वह दोनों साथ-साथ पीएच.डी. करते हैं

---

१ शेषायात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण - १९८४ - पृ. १०६ ।

२ शेषायात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण - १९८४ - पृ. ३७ ।

और दोनों मिलकर एक रेस्तरॉ में काम भी करते हैं । यहाँ स्त्री-पुरुष संबंधों की परंपरागत मान्यता के स्थान पर नये मूल्यों की स्थापना हुई है । दूसरे शब्दों में संबंध जो परंपरागत अर्थों से बंधन के प्रतीक थे, अब वे सहज होते जा रहे हैं ।

आज संबंधों का आधार मानवीय भावना न होकर स्वार्थ अर्थात् आर्थिक धरातल रह गया है । सभी संबंधों का मूल्यांकन स्वार्थ की दृष्टि से किया जा रहा है । जिससे अधिक लाभ होगा उसके प्रति विशेष झुकाव रहता है । परिणामस्वरूप अब संबंधों में परंपरागत मर्यादा का अंत होकर स्वतंत्रता को स्थान मिलने लगा है ।

समाज का आर्थिक पक्ष --

समाज की विभिन्न इकाइयों में अर्थ-व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्थान है । अर्थ ही समाज की शीराओं में बहनेवाला वह रक्त है, जो संपूर्ण समाज का जीवन संचालित करता है । प्रत्येक युग का सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन अर्थ-प्रक्रिया से प्रभावित रहा है । समाज विकास का मूलाधार अर्थ ही है । प्राचीन जाति प्रथा से वर्गप्रथा के विकास में भी आर्थिक स्थिति का महत्वपूर्ण हाथ है । आज यही वर्गभावना आधुनिक समाज-व्यवस्था की एक प्रमुख विशेषता बन गई है ।

सुश्री उषा प्रियंवदाजी ने अपने साहित्य सृजन के लिए विशेष रूप से मध्यवर्ग को ही अपनाया है । उनके साहित्य में मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति, आर्थिक कठिनाइयाँ और उससे उत्पन्न विभिन्न समस्याओं का यथार्थ रूप दिखाई देता है ।

मध्यवर्ग में समाज का वह वर्ग आता है, जो आर्थिकदृष्टि से बहुत अच्छा नहीं है, उसमें विशेष रूप से निम्न-मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति अधिक चिंताजनक

होती हैं । मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति प्राय: जटिल रहती हैं, जिसका निरूपण प्रियंवदाजी के कृतियों में स्थान-स्थान पर हुआ हैं ।

किसी भी व्यक्ति के आर्थिक स्थिति जानने के लिए उसे पितृदाय के रूप में क्या मिला हैं यह जान लेना आवश्यक हैं । क्योंकि पितृदाय से प्राप्त संपत्ति उसकी स्थायी संपत्ति होती हैं । इस पितृदाय संपत्ति के अंतर्गत घर, जमीन, जायदाद आदि बाते आती हैं । प्रियम्वदाजी के ` रुकोगी नहीं,... राधिका ? ` उपन्यास में राधिका के पिता को पितृदाय संपत्ति के रूप में मिले पैतृक मकानों का उल्लेख मिलता हैं -- ` बाबा ( राधिका के दादा ) अपने समय के बडे प्रसिध्द वकीलों में थे और समृध्दि स्वरूप शहर में दुकानों की एक पांत और यहाँ-वहाँ तीन-चार घर छोड गये थे ।`[१] ` गंगापार वाली कोठी भी, दूसरी जायदाद की तरह पापा को बाबा से मिली थी ।`[२] कई बार यह पैतृक संपत्ति ही उसके उत्तराधिकारीयों की आजीविका चलाने में सहायक सिध्द होती हैं । ` सुरंग ` कहानी में ऐसी स्थिति का संकेत मिलता हैं - ` मकान पैतृक हैं, रहना छोटे शहर का, पिता के मरने से बाहर का जो कमरा खाली हुआ उसमें कभी कभी कोई किरायेदार आ जाता हैं ।`[३]

संयुक्त परिवार का विभाजन होनेपर पैतृक संपत्ति का भी विभाजन हो जाता हैं । ` रुकोगी नहीं,... राधिका ? ` उपन्यास में राधिका के ननिहाल के पैतृक मकान के बँटवारे का उल्लेख मिलता हैं -- ` माँ के परिवार में राधिका के तीन मामा थे, एक बालविधवा मौसी, एक बूढी नानी । लखनऊ में नौ कमरों का एक पैतृक मकान, जिसमें रज्जु मामा के हिस्से में तीन कमरे आये थे`[४] ।

---

१ रुकोगी नहीं,.... राधिका ? ` उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - पाँचवा संस्करण - १९८४ - पृ. ४२

२ -- वही - पृ. ३८

३ कितना बडा झूठ - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, तृतीय संस्करण - १९७६ - पृ. ७१

४ रुकोगी नही राधिका ? - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - पाँचवा संस्करण - १९८४ - पृ. २२

प्राय: यह देखा गया है, कि निम्न मध्यवर्ग को आर्थिक विपन्नता के कारण अनेक कठिनाइयों का सामना करना पडता है । कई निम्न मध्यवर्गीय माता-पिता अपनी आर्थिक विवशताओं के कारण संतानों के प्रति होनेवाले अपने कर्तव्यों को भी नहीं निभा सकते ।' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास में छाजी ने एक ऐसे माता-पिता को दिखाया है जो अपनी आर्थिक विवशता के कारण अपने संतान के प्रति होनेवाले अपने उत्तरदायित्व को नहीं निभा सकते । इस उपन्यास की सुषामा के माता-पिता उनकी आर्थिक मजबूरी तथा थोडी स्वार्थ भावना के कारण सुषामा का विवाह कर देना टाल देते हैं --' यदि पिताजी चाहते तो क्या उसका विवाह नहीं कर सकते थे । लोग लाख प्रयत्न कर बेटी के ब्याह का सामान जुटाते हैं । क्या उसी के पिता अनोखे थे ? बात असल यह थी , कि उन्होंने यह चाहा ही नहीं कि सुषामा की शादी हो, उनके अन्तर्मन में यह बात आवश्य होगी कि सुषामा से उन्हें सहारा मिलेगा । वह पढने में प्रारंभ से ही तेज थी और साथ ही बडी आज्ञाकारिणी थी । वह जब एम.ए. फाइनल में थी तब तो उसकी शादी करीब-करीब तय ही हो गयी थी । मामा बीच में पडे थे, पर पिताजी ही ढील दे गये । ... उनके रिटायर होने में तब केवल तीन साल बाकी थे और बच्चे छोटे थे । उस समय सुषामा की शादी करने से उनकी सारी आर्थिक व्यवस्था गडबड हो जाती ।'[१]

नौकरी पेशा में लगे मध्यवर्गीय लोग आर्थिक तंगी के कारण अपनी जरूरी आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर सकते ।' रुकोगी नहीं,... राधिका ?' उपन्यास में राधिका के मामा के परिवार की रहन-सहन को देखते ही उनकी स्थिति का पता चलता है -- ' यह बात जरूर है, कि जो कुछ धनाभाव के कारण है, वह झट से दृष्टि में आ जाता है जैसे रज्जु मामा का स्वास्थ्य या छोटे के जुते का पालिश करने पर भी पुरानापन, या मामी के कमरे की दीवारों से झरता चूना

---

१ पचपन खम्भे लाल दीवारें - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - चतुर्थ संस्करण - १९८४ - पृ. ३५ ।

या मौसी की धोती में जगह-जगह भरी हुई खोपें । यह सब थोडा-बहुत तो पहले भी था, क्योंकि एक सेकेण्डरी स्कूल के शिक्षक का वेतन ही कितना होता है..." [१] ।

जिन लोगों का मासिक वेतन के अतिरिक्त आय का कोई अन्य साधन नहीं होता, उन्हें वेतन की उस सीमित रकम में ही अपनी गृहस्थी का खर्चा चलाना पडता है । इसीकारण परिवार के सभी लोग अपनी आवश्यकताओं को घटाकर, मितव्ययिता को अपनाते हैं । प्रियावंदाजी के " सम्बन्ध " कहानी में यह बात दिखाई देती है । कहानी की नायिका श्यामला के परिवार में उसका वेतन ही परिवार की मुख्य आय होने के कारण उसी में उसकी माँ सावधानी से खर्च चलाती थी --" जब वह कालेज में पढाती थी तो जिया (माँ) एक रुपया रोज दिया करती थीं, बस के किराये और चाय का खर्च निकल आता था । हर महिने पूरी तनख्वाह वह जिया को लाकर देती थी । सब जानते थे कि उसी में सब होना है, न जाने वह कैसे मैनेज करती थी, कितने लोग थे, अविनाश,प्रकाश, कुमुद, वह जिया और बडी दीदी । सभी पढनेवाले थे, बडी दीदी ने तो विधवा हो जाने के बाद स्कूल जाना शुरु किया था । मिलजुलकर जो भी होता वह, खा लेते, साझे में वही साडियाँ तीनों बहनें पहनती रहती ।" [२]

" वापसी " कहानी के गजाधरबाबू भी नौकरी से सेवा निवृत्त होने पर यह सोचते हैं, कि अब अपने हाथ में पैसे कम रहेंगे, इसीलिए पत्नी से कहते हैं, कि परिवार का खर्च कुछ घटा-दिया जायें -" गजाधरबाबू ने घर गृहस्थी की बातें छेडीं, वह घर का खर्चा देख रहे थे । बहुत हल्के से उन्होंने कहा, कि अब हाथ में पैसा कम रहेंगा, कुछ खर्च कम होना चाहिए ।" [३]

---

१ रुकोगी नहीं,... राधिका ? - ऊषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - पाँचवा सं., १९८० - पृ. २३

२ कितना बडा झूठ - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन,तृतिय सं.,- १९७६ - पृ. १४

३ मेरी प्रिय कहानियाँ - ऊषा प्रियंवदा - राजपाल एण्ड सन्स - प्र.सं., १९७४ - पृ. ७७

निम्न मध्यवर्गीय लोगों को धनाभाव के कारण अनेक मजबूरियों का सामना करना पड़ता है । ' टूटे हुए ' कहानी का भास्कर जो विदेश में डाक्टरेट लेने के लिए गया है, छात्रवृत्ति पाकर भी स्मार्ट सेट से नहीं रह सकता, क्योंकि भारत में रहनेवाला उसका परिवार आर्थिक रूप से उसी पर निर्भर है और अपने दायित्व को निभाने के लिए उसे अपने छात्रवृत्ति का आधा भाग घर भेजना पड़ता था- ' मेरी मजबूरियाँ यहाँ भी पीछा कर रही थीं । छात्रवृत्ति का आधा भाग घर भेज देता था, वहाँ माँ थी, विवाह योग्य बहन, कालेज में पढ़ता भाई ।'[1]

अपनी धनलालसा के पुर्ति के लिए कोई छल कपट का सहारा भी लेता है । ' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास की मिसेज रायचौधरी, सुषामा को वार्डनशिप के पद से हटाने पर उसकी जगह स्वयं की नियुक्ति होने से आर्थिक लाभ होगा, इस स्वार्थ भावना के कारण ही मिस शास्त्री के कहने में आकर सुषामा के विरुध्द छाड:यंत्र रचाने को उद्यत होती है -- ' वह मन ही मन हिसाब लगाने लगी कि मकान को किराये पर उठा लेने से कम-से-कम दो सौ रुपये तो मिलेंगे ही । यहाँ मकान मिलेगा और सौ रुपये अलाउंस । खाना वह स्वयं बना लेगी और छात्रावास के नौकर अन्य काम कर देंगे - कुल मिलाकर फायदा ही रहेगा ।'[2]

निम्न मध्यवर्गीय लोगों से अधिक उच्च मध्य वर्गीय लोग धन के लोभी होते हैं, क्योंकि उसकी आवश्यक्तायें भी उच्च होती है । अत: अपनी आवश्यक्ताओं के पुर्ति के लिए अधिकाधिक अर्थार्जन करने में प्रयत्नरत होता है । ' स्वीकृति ' कहानी का सत्य भी अधिक सुख-सुविधा उपलब्ध कर लेने के लिए अधिक अर्थार्जन करना चाहता है । इसलिए अपनी पत्नी जया के अनिच्छा के बावजूद

---

१ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - द्वितीय संस्करण - १९८६ - पृ.१२५ ।

२ पचपन खम्भे लाल दीवारें - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण - १९८४ - पृ.८७ ।

भी उसे नौकरी करने के लिए मजबूर करता है, वह जया को उसकी नौकरी की आवश्यकता का कारण बताते हुए कहता है -- ` हम जिस स्थिति में है, उसमें पन्द्रह सौ डालर का ऑफर अस्वीकार नहीं कर सकते ।` [१]

समाज में मध्यम वर्ग की स्थिति सर्वाधिक विचित्र है । वह सदा से दो पाटों के बीच पिसता रहा है । यह मध्यम वर्ग निम्न वर्ग पर खडा होकर उच्च वर्ग के रंगीन स्वप्न देखता है । अपनी सीमित आय में उच्च वर्ग की स्पर्धा करना चाहता है । आय की अपेक्षा व्यय अधिक करता है । फलस्वरूप मध्यम वर्ग सदा ही आर्थिक असंतुलन से पीडित रहता है ।

ऊषाजी के ` वापसी ` कहानी में गजाधर बाबु के परिवार के लोग झूठी अहं मान्यता के कारण अपनी औकात से अधिक खर्च करते नजर आते है । ` गजाधर बाबू को यह महसूस होता रहता था कि उनके घर का रहन-सहन और खर्च उनकी हैसियत से कहीं ज्यादा है । पत्नी की बात सुनकर लगा कि, नौकर का खर्च बिलकूल बेकार है, छोटा-मोटा काम है, घर में तीन मर्द है, कोइ न कोई कर ही देगा, उन्होंने उसी दिन नौकर का हिसाब कर दिया ।` [२]

उच्च मध्यवर्गीय लोगों में तो यह दिखावटीपन और भी अधिक रहता है । यह लोग समाज में अपनी झूठी प्रतिष्ठा दिखाने के लिए बिना सोचे समझे अपनी संचित पूँजी किसी समारोह का आयोजन कर लूटाते है । ` शेषायात्रा ` उपन्यास में एक ऐसे प्रसंग को दिखाया है । इस उपन्यास की निरजा और उसका पति आलोक अपने बच्चे के नामकरण समारोह में काफी पैसे लूटाते है, जब कि उनकी पढाई बील में है, इम्तहान में फेल हो रहे है, भविष्य में नौकरी का ठिकाना नहीं है --

---

१ कितना बडा झूठ - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - तृतीय संस्करण - १९७६ - पृ. ८३ ।

२ (१) मेरी प्रिय कहानियाँ - ऊषा प्रियंवदा -- राजपाल एण्ड संन्स, प्र.सं. -१९७४ - पृ. ८१ ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR
CENTRAL BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

`नीरजा और आलोक वहाँ अपने बंदर जैसे बेटे के समारोह में सैकडो डालर लुटा रहे थे, आगे की नौकरी का ठिकाना नही था ।`[१]

सामान्यरूप से किसी भी परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी उस परिवार के प्रमुख पुरुष पर होती है । परंतु यदि दुर्भाग्य से किसी घर में कमानेवाला पुरुष न हो, तो घर की जवान लडकियाँ ही नौकरी करने लगती है । प्रियंवदाजी के कृतियों के कई नारी पात्र अपने परिवार के आर्थिक बोझ को उठाती नजर आती है । ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास की सुषमा के पिता अस्वस्थ और पक्षाघात से पीडित रहने के कारण अपनी गृहस्थी का बोझ संभालने में असमर्थ है । इसीलिए परिवार की सबसे बडी संतान होने के नाते सुषमा ही कॉलेज में नौकरी कर अपने परिवार के आर्थिक बोझ को संभालती है । ` सम्बन्ध ` कहानी में नायिका श्यामला के पिता के मृत्यु के बाद नायिका श्यामला द्वारा ही नौकरी कर अपने परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी उठा लेने का जिक्र हुआ है ।

` जिन्दगी और गुलाब के फूल ` कहानी में सुबोध के बेकार होनेपर उसकी बहन वृन्दा स्कूल में नौकरी कर अपने परिवार को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है ।

आर्थिक सुरक्षा के लिए मध्यवर्गीय विवाहित नारी भी प्रयत्नशील है, जब पति की आय से घर का खर्च सुचारु रूप से न चलता हो, या घर की आर्थिक स्थिति ठोस न हो तो पत्नी भी पति को अपना क्रियात्मक सहयोग प्रदान करके आर्थिक सुरक्षा प्राप्त करा देती है । ` शेषायात्रा ` उपन्यास में ऐसी एकाधिक नारियाँ देखने को मिलती है, जो पति के साथ स्वयं भी अर्थार्जन करती है । इस उपन्यास की एक पात्र विभा डाक्टर है, जो अपने पति के साथ अस्पताल में काम करती है । इसी उपन्यास की नीरजा भी स्वयं नौकरी कर अपने पति आलोक को

---

१ शेषायात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - प्र. सं. १९८४ - पृ. ३७

आर्थिक दृष्टि से सहारा देती हैं ।

अनु की सहेली दिव्या भी अपने पति के साथ - साथ, मिल-जुलकर काम करती हैं । अपनी जानकारी देते हुए वह अनु से कहती हैं --` जयन्त पाकिस्तानी रेस्तराँ में काम करते हैं । मैं भी वहीं वेट्रस हूँ ।` इसी प्रकार ` स्वीकृति` कहानी की जया भी अपने पति को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए हिन्दी पढाने की नौकरी स्वीकार करती हैं ।

विधवा या परित्यक्त होनेपर नारी स्थिति के प्रति सचेत हो जाती हैं और शीघ्र ही स्वावलंबी बनने का प्रयत्न करती हैं ।` शोषायात्रा ` उपन्यास की अनु उसके पति प्रणव द्वारा त्याग दिये जाने पर अपने आर्थिक स्थिति के लिए सचेत होती हैं । वह सोचती हैं --` प्रणव एक साधारण सा व्यक्ति हैं । ... साधारण कद-काठी, साधारण रूप-रंग, बस विलायती डॉक्टरी की डिगरी अलग हैं । डिगरी का मतलब हैं पैसा, पैसों का मतलब हैं ताकत । पसंद आ जाने पर किसी लडकी को शाख से तोडकर हाथ में ले लेने की शक्ति । पुरुष के इस शक्ति के आगे अनु बेबस हैं ।` [२] प्रणव से तलाक लेने पर अनु अपनी इस बेबसी को मिटाना चाहती हैं । इसीलिए प्रणव से तलाक लेने पर वह एक मेडिकल कॉलेज में ॲडमिशन लेकर अपनी अधूरी शिक्षा पूरी कर देती हैं, और वह डॉक्टर बन कर आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बन जाती हैं ।

` मछलियाँ ` कहानी की विजयलक्ष्मी भी अपनी शादी टूट जाने पर आर्थिक सुरक्षा पाने के लिए एक लाइब्रेरी में भारतीय भाषाओं के पुस्तकों की कॅटलॉगिंग करने की नौकरी करने लगती हैं ।

---

१ शोषायात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - प्र.सं.१९८४ -पृ.७२

२ - वही - पृ.६८ ।

कभी कभी असुंदर होने पर समाज द्वारा उपेक्षित नारी स्वयं को आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र करना चाहती है, जिससे वह अपने गुणों या मूल्य में वृध्दि कर सकें। `जिन्दगी और गुलाब के फूल` कहानी की वृन्दा, `बदसूरत थी और उससे कोई शादी करने को राजी नहीं होता था ... इसलिए वह एक-स्कूल में नौकरी करने लगती है।..[1] `स्वीकृति` कहानी की जपा भी अपने विवाह पूर्व भी नौकरी करती थी, क्योंकि `वह जानती थी, कि वह अत्यंत साधारण है और इसीकारण पढाई समाप्त कर उसने एक छोटे से शहर में नौकरी कर ली और शायद अब भी वह वहीं होती, यदि सत्य से उसका विवाह न हो गया होता।`[2]

किसी कारणवश विवाह टल जाने पर अकेली रह गयी युवतियाँ भी नौकरी कर आर्थिक सुरक्षा पाती हैं। `कोई नही` कहानी की नमिता अविवाहित युवती है। वह युनिव्हर्सिटी में अध्यापन का काम करती है। और उसी वेतन पर अपना निर्वाह करती है। वह अकेली ही रहती है, इसीकारण अपनी वृध्दावस्था के आर्थिक सुरक्षा के हेतु एक स्थायी मकान बनवाना चाहती है -- `रुपया काफी जमा हो जाने पर एक मकान बनवा लूँगी, बुढापा उससे कट जायेगा।`[3]

सामान्य रूप से यह माना जाता है कि पिता के पश्चात उसकी सम्पत्ति का उत्तराधिकार उसके पुत्र को प्राप्त होता है, परंतु जब किसी व्यक्ति को पुत्र न होकर केवल एक ही पुत्री होती है, तो उसकी सम्पत्ति का उत्तराधिकार उसकी बेटी और दामाद को मिल जाता है। `रुकोगी नहीं,... राधिका ?` उपन्यास में राधिका के बडे भाई को ससुराल से मिली सम्पति का उल्लेख मिलता है - `भाभी पिता की अकेली संतान है, और बड दा ने विवाह के बाद से ही ससूर का कारबार संभाल लिया। दो मिलें, एक शुगर फॅक्टरी, ट्रकें, सिनेमा हाऊस और

---

१ मेरी प्रिय कहानियाँ - उषा प्रियंवदा - राजपाल एण्ड सन्स - प्रथम संस्करण - १९७४ - पृ.१२७।

२ कितना बडा झूठ - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, तृ.सं.-१९७६ - पृ.८६।

३ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा- अक्षर प्रकाशन, द्वि.सं.१९८६-पृ.५६।

भी न जाने क्या क्या ।' [1]

विवाह के पश्चात् पत्नी, पति के संपत्ति की साझीदार हो जाती है । इसीलिए 'छलियाँ' कहानी का नटराजन अपना विवाह मुकी से तय हो जाने पर ही उसे अपनी संपत्ति का साँझीदार बना कर आर्थिक सहुलियत देता है -- 'नटराजन ने विवाह से पहले ही अपने बैंक के अकाऊंट में उसका नाम चढावा दिया है और उसे पूरी छुट दे दी है ।' [2]

परिवार की संपत्ति पर पति और पत्नी दोनों का भी समान अधिकार होता है । इसीलिए घर के किसी भी आर्थिक व्यवहार में दोनों की परस्पर अनुमति आवश्यक होती है । पत्नी के हस्ताक्षर के बिना पति परिवार से संबंधित महत्वपूर्ण आर्थिक व्यवहार नहीं कर सकता । 'शेषायात्रा' उपन्यास का प्रणव जब अपना मकान बेचना चाहता है, तब उसे उसकी पत्नी अनु का हस्ताक्षर लेना पडता है -- 'घर के दाम लग चुके हैं । तुम्हारे हस्ताक्षरों की जरूरत है । .... हमने घर नब्बे हजार में खरीदा था, अब सवा लाख पर बात पक्की हुई है। कुल मिलाकर हम दोनों को पैंतीस हजार का नफा होगा, पन्द्रह हजार घर खरीदते वक्त दिया था, इसलिए पचास हजार होंगे ।' [3]

यदि किसी कारणवश पति पत्नी को तलाक देता है, तो पत्नी को घर की संपत्ति का आधा हिस्सा उसे देना पडता है । साथ ही पत्नी को पति द्वारा भरण-पोषाण का खर्च भी कानूनन मिलता है । 'शेषायात्रा' उपन्यास में इस बात का उल्लेख मिलता है । प्रणव और अनु में सम्बन्ध-विच्छेद हो जाने पर जज द्वारा उन दोनों में संपत्ति का बटवारा किया जाता है -- 'जज ने घर में आधा हिस्सा और घर का सामान अनु को दिया, आधा हिस्सा और गाडी

---

१ रुकोगी नहीं, .. राधिका ? - ऊषा प्रियवंदा-अक्षर प्रकाशन - पाँचवा संस्करण - १९८० - पृ. ४९ ।

२ कितना बडा झूठ - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, तृतीय सं., १९७६ - पृ. १०२

३ शेषायात्रा - ऊषा प्रियवंदा - राजकमल प्रकाशन, प्र.सं. - १९८४ - पृ. ८६ ।

प्रणाच को । अनु ने रहने,खाने के खर्च को माँग नहीं की थी, इसलिए उसे वह नहीं मिला,हालाकि उसे वह माँगने और लेने का पूरा पूरा हक था ।'[१]

आज आर्थिक सूरक्षा के लिए बैंक,बीमा कंपनी,सहकारी पतपेढियाँ आदि अनेक आर्थिक संस्थाओं का विकास हुआ है । व्यक्ति अपनी आर्थिक सूरक्षा के लिए इन संस्थाओं में इन्व्हेस्टमेन्ट करता है । भविष्य में आर्थिक आपत्तियों से बचने के लिए वह अपनी आमदनी में से कुछ पैसों की बचत हमेशा करता है । आज कल नौकरी पेशा लोगों के लिए 'भविष्य निर्वाह निधी' (प्राविडेन्ट फंड) नामक एक आर्थिक योजना सरकार द्वारा शुरु की गई है । इस योजना के द्वारा प्रत्येक नौकरीपेशा व्यक्ति के मासिक वेतन का कुछ हिस्सा उसके भविष्य की आर्थिक सुरक्षा के हेतू सख्ती से छोडकर रख लिया जाता है और यह रकम उसे नौकरी से सेवा निवृत्त होने पर मिल जाता है । अगर नौकरी के बीच ही उसे किसी कारण से पैसों की आवश्यकता पड जाये तो वह प्राविडेंट फंड से कर्ज ले सक्ता है । प्रियंवदाजी के 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में उपन्यास की नायिका सुषामा का उसकी छोटी बहन नीरु के विवाह के लिए रकम खडी करने के लिए प्राविडेण्ट फंड से लिए कर्ज का उल्लेख मिलता है -- 'दो हजार का प्रबन्ध बाबू कर लेंगे पर बाकी का सुषामा को करना पडेगा । सुषामा ने अपने पास इक्ट्ठा हो गया रुपया बैंक से निकाल लिया और बाकी का प्राविडेण्ट फंड से कर्ज ले लिया[२]।'

इसीप्रकार आर्थिक सूरक्षा के लिए जीवन बीमा निगम भी सहायक सिध्द होता है । अगर किसी व्यक्ति की अपघात से मृत्यु हो जाती है, तो उसके परिवारवालों को बीमा कंपनी द्वारा आर्थिक सुरक्षा प्राप्त होती है । 'शेषायात्रा' उपन्यास में नमिता के पति की अपघाती मृत्यु होने के पश्चात् उसे प्राप्त हुई जीवन बीमा की रकम का संकेत मिलता है -- 'सुनी सुनाई बात कान में पडी थी , कि

---

१ - शेषायात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - प्र.सं.-१९८४ - पृ.९२

२ पंचपन खम्भे लाल दीवारें - उषाप्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, - चतुर्थ संस्करण - १९८४ - पृ.११५ ।

जनार्दन के जीवन बीमा की भारी रकम उसे मिली है, काम करने की जरूरत नहीं है ।"[१]

उपर्युक्त विवेचन के आधारपर हम कह सकते हैं, कि प्रियंवदाजी ने विशेषारूप से मध्यवर्गीय लोगों के ही आर्थिक जीवन तथा आर्थिक समस्याओं का चित्रण किया है । इसका महत्वपूर्ण कारण यह है, कि उन्होंने मध्यवर्ग को अत्यंत निकट से देखा है । और इसीलिए वह उन्हीं के आर्थिक पक्ष को सूक्ष्मता से अंकित कर सकी है ।

समाज का धार्मिक पक्ष --

मानव समाज में धर्म का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है । किसी न किसी रूप में धर्म सभी समाजो में रहा है, भले ही वह समाज पिछडा हो या भौतिक दृष्टि से अत्यंत प्रगत । आदिम युग से ही धर्म मानव के लिए बहुत बडा संबल रहा है । मानव के चिंतन, मनन, व्यवहार और कर्म में उचित अनुचित को लेकर धर्म ने एक निर्णायक सत्ता का कार्य किया है । सभी समाजों ने हर समय किसी न किसी रूप में ईश्वर को भी स्वीकार किया है, जिससे प्राकृतिक घटनाओं की पृष्ठभूमि में किसी अदृश्य शक्ति के अस्तित्व को मान्यता मिलती रही है ।

भारतीय संस्कृति से धर्म का प्रगाढ संबंध है । सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का मूलाधार धर्म ही रहा है । परंपरा में धर्म को जीवन से पृथक नहीं देखा गया । भारतीय जीवन की प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में धर्म के प्रति आस्था अपने आप में एक विशेषता रही है । परंतु आज वैज्ञानिक उन्मेष और पाश्चात्य चिंतन के प्रभाव से परंपरागत धार्मिक मुल्यों एवं ईश्वर के सत्ता के प्रति विश्वास में परिवर्तन आया । सुश्री उषा प्रियंवदाजी के साहित्य में धर्म के

---

१ शेषायात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - प्रथम संस्करण - १९८४ - पृ. १०१ ।

परंपरागत मूल्य और परिवर्तित मूल्य दोनों का भी संकेत मिलता है ।

परंपरागत भारतीय समाज में ईश्वर के प्रति आस्था और श्रध्दा रही है । जीवन की भाग दौड से कुछ पल के लिए मानसिक शांती प्राप्त करने के लिए मनुष्य ईश्वर का आश्रय ढूंढता है और इसीलिए उसने मंदिरों, देवालयों आदि धार्मिक स्थलों की स्थापना की है । अपने व्यस्त जीवन में से कुछ समय निकालकर वह ईश्वर के दर्शन कराने के लिए मंदिर जाता है । अगर नित्य संभव न हो तो किसी त्यौहार, पर्व पर वह मंदिर जाकर ईश्वर का दर्शन करता है । ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में विशेष्ठा तिथि पर मन्दिर जाने का संकेत मिलता है --` टीले के पीछे देवी का प्रसिध्द मन्दिर था, पिछली बार नवमी पर जब सुषमा मीरा दी के साथ देवी के दर्शन को गयी थी, तो एक भिखारिन बुढिया उसके पीछे लग गयी थी, ` तू सात बेटों की माँ हो रानी, तेरा राज बढे, तेरी माँग मोती से भरी रहे - तू फुलों की सेज सोये रानी ` - और मुस्कराती सुषमा ने उसके कटोरे में कुछ पैसे डाल दिये ।` [१]

भारतीय लोगों की धार्मिक श्रध्दा अत्यंत दृढ है । अपने धर्म के प्रति होनेवाली आस्था के कारण ही वह जहाँ भी बस जाते है वहीं पर अपने धार्मिक स्थल की स्थापना कर देते है । ऊषाजी के ` सागर पार का संगीत ` कहानी में कॅनडा में जा बसे भारतीय सिक्ख धर्मिय लोगों द्वारा गुरुद्वारे की स्थापना का उल्लेख मिलता है -` श्री करतारसिंह देवयानी को साथ ले जाने के लिए आये है । सिक्ख भाइयों के प्रयत्न से वॅनकूवर आइलॅड में एक गुरुद्वारे की स्थापना की गयी है ।` [२]

---

१ पंचपन खम्भे लाल दीवारें - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - चतुर्थ संस्करण - १९८४ - पृ. ११९ ।

२ एक कोई दूसरा - ऊषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - द्वितीय संस्करण - १९८६ - पृ. ७२ -

धार्मिक-कर्मकाण्ड, अनुष्ठान, पूजा आदि तो भारतीय समाज के रक्त में अन्तर्निहित हैं । ईश्वर को प्रसन्न रखने के लिए भारतीय समाज में दैनंदिन जीवन में ईश्वर की पूजा-अर्चा को एक आवश्यक धर्म-कृत्य माना गया है । अत: परिवार में ईश्वर की पूजा-अर्चना नित्य प्रति की जाती है । ` सुरंग ` कहानी में परिवार में की जानेवाले ईश्वर की पूजा अर्चा का जिक्र मिलता है -` माँ की कोठरी में पूजा की घण्टी बजने लगी है, वे आरती कर रही हैं और मन्द स्वर में कुछ गा रही हैं ।` [१]

` रुकोगी नहीं,.... राधिका ?` उपन्यास में भी शाम के समय की जाने वाले ईश्वर की पूजा का संकेत मिलता है --` कमरे में वह अकेली थी और बाहर एक विषाद भरी साँझ । मामा अपनी ट्यूशन पर चले गये, मौसी मुँह लपेट कर अपनी राधास्वामी की पूजा में लीन हो गयी ।` [२]

आज कल ईश्वर की इस पूजा विधि में बाह्याडंबर ने प्रवेश किया है । यही कारण है कि आज पूजा में श्रध्दा कम और दिखावटी पन की भावना अधिक दिखाई देने लगी है । कभी कभी पूजाविधि के गलत ढंग को अपनाया जाता है । उषाजी के ` वापसी ` कहानी में पूजा में अज्ञानवश किये गये अशुध्द स्तुति का उल्लेख मिलता है --` थोडी देर में उनकी पत्नी हाथ में अर्घ्य का लोटा लिए निकली और अशुध्द स्तुति कहते हुए तुलसी मे डाल दिया ।` [३]

परंपरा में धर्म में ईश्वर पूजा के साथ आचरण की शुध्दता पवित्रता पर भी अधिक ध्यान दिया जाता था । लेकिन अब यह बात नहीं रही । अत: आज का व्यक्ति ईश्वर की पूजा कर लेने पर भी कई ऐसे काम करता है, जो धर्म द्वारा

---

१. कितना बडा झूठ - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, तृतीय सं., - १९७६ - पृ. ७४ ।

२ रुकोगी नहीं,... राधिका ? - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन पाँचवा संस्करण - १९८० -पृ. २८ ।

३ मेरी प्रिय कहानियाँ - उषा प्रियंवदा - राजपाल एण्ड सन्स - प्रथम संस्करण - १९७४ - पृ. ७५ ।

निषिद्ध माने जाते हैं । ऊषाजी के ` पिघलती हुई बर्फ ` कहानी के छबि के पिता ऐसे ही व्यक्ति हैं । उनके बारे में बात करते हुए मिसेज शुक्ला कहती हैं -- बीवी को कुढा-कुढाकर मार डाला । बेटी जवान हो गयी है, पर उसकी शादी की चिंता नहीं । शाम को पूजा घर से निकलते हैं और बोतल लेकर बैठ जाते हैं।` [१]

हिन्दू धर्म में गंगा नदी का धार्मिक महात्म्य माना गया है । एक पौराणिक कथा के अनुसार गंगा नदी देवलोक से पृथ्वी पर लायी गयी हैं और इसीकारण उसे पवित्र माना जाता है । अत: हिन्दुओं के लिए गंगास्नान करना एक धार्मिक कृत्य माना गया है । साथ ही ईश्वर की आराधना भजन कीर्तन द्वारा भी की जाती है । ` सुरंग ` कहानी में गंगास्नान और भजन-कीर्तन का संकेत मिलता है -` माँ गंगा स्नान के बाद लौटी है । तीन घंटे भजन-कीर्तन के बाद भी उनके चेहरे से खीज की रेखाएँ नहीं जाती ।` [२]

प्रत्येक धर्म का एक तीर्थस्थान होता है जो धार्मिक दृष्टि से अत्याधिक महत्वपूर्ण होता है । और यह माना जाता है कि तीर्थयात्रा करने से व्यक्ति को मोक्ष प्राप्त होता है, इसीलिए हर कोई अपने जीवन में एक बार तीर्थयात्रा करना चाहता है । तीर्थयात्रा विशेषत: रूप से जीवन के उत्तरकाल में की जाती है, क्योंकि तभी व्यक्ति अपने सांसारिक मोह जाल से विरक्त होकर ईश्वर की चरणों में तन-मन से समर्पित होता है । ` सम्बन्ध ` कहानी में श्यामला की माँ का उनकी वृध्दावस्था में तीर्थयात्रा से हो आने का संकेत मिलता है -` अब जब अविनाश, प्रकाश पढ गये हैं, कुमुद की शादी हो गयी, बडी दीदी अपने स्कूल के विधुर प्रिंसिपल की पत्नी हैं और जिया (माँ) भी बदरीधाम हो आयी है [३]

---

१ एक कोई दूसरा - ऊषा प्रियवंदा - अक्षर प्रकाशन, द्वितीय संस्करण - १९८६ - पृ. १०० ।

२ कितना बडा झूठ - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, तृतीय संस्करण - १९७६ -पृ. ७० ।

३ - वही - पृ. १५ ।

ईश्वर में आस्था रखनेवाला मनुष्य आपत्तिकाल में भी ईश्वर की शरण लेता है । उसके मन में यह विश्वास रहता है, कि ईश्वर की सहायता से उसके संकट दूर होंगे । कभी कभी अपनी कामना पूर्ति के लिए वह ईश्वर से मनौती भी करता है । 'शेषयात्रा' उपन्यास में यह बात दिखाई देती है । उपन्यास की नायिका अनु का पति प्रणव जब उसे त्याग देना चाहता है, तब उसे पाने के लिए वह बिलख - बिलखकर अनेक देवताओं की मनौती करने लगती है -- 'गॉड, ओ गॉड हेल्प मी । मेरी मदद करो, मुझे शक्ति दो, ओ सत्ति मैया, ओ साई बाबा... मनसा देवी, तुम्हें चीर बाँधूँगी, विन्ध्यवासिनी देवी, तुम्हें चुनरी उढाऊँगी, गंगा मैया, मैं भरे जाडों तारों की छाँह नहाऊँगी, मेरे प्रणव को मुझे लौटा दो, हनुमानजी जिन्दगी भर मंगल का व्रत करूँगी, लक्ष्मीनारायण, मैं सोने का छत्र चढाऊँगी, तिरुपति के स्वामी तुम्हें...' [१]

वर्तमान काल में व्यक्तिवादी और अस्तित्ववादी चिंतन के प्रभाव के फलस्वरूप युवा-मानस में ईश्वर के प्रति अनास्था की भावना प्रबल हो रही है । 'प्रियंवदाजी के' एक कोई दूसरा' कहानी की निलांजना के मन में ईश्वर में विश्वास नहीं है । वह कहती है -- 'भगवान पर मैं विश्वास नहीं करती, कभी मन्दिर में गई हूँ यह याद नहीं पडता ।' [२]

जब कभी ईश्वर के प्रति मन में श्रध्दा रहने पर भी जीवन में बार-बार दु:ख और पराजय ही मिलती है, तब मनुष्य के मन में मनुष्य के प्रति होनेवाला विश्वास नष्ट होने लगता है । 'शेषयात्रा' उपन्यास में अपने पति प्रणव को पाने में पराजित हुई अनु के मन में भी धर्म के प्रति अविश्वास की भावना पैदा होने लगती है । वह दिव्या से कहती है -- 'तो वह झूठ था । झूठ था न दिवी ? सारे व्रत, त्यौहार, जप-तप, कथा कहानियाँ सब झूठ थीं न । झूठ है । मेरा सारा

---

१ शेषयात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - प्रथम संस्करण - १९८४ - पृ. ९९

२ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - द्वितीय संस्करण - १९८६ - पृ. २७ ।

डिवोशन प्रणव के चरणों पर निछावर हो जाना, सबकुछ झूठा पड गया ।'[१]

भारतीय समाज प्रारंभ से ही आस्तिक और भाग्यवादी रहा है । उसकी हमेशा से ही यह मान्यता भी रही है कि जीवनगत उत्थान-पतन, गरीबी-अमीरी, दुख-सुख, परिवर्तन-आवर्तन, ईश्वरीय कृपा एवं भाग्य का ही प्रतिफल होता है । ईश्वर और भाग्यवाद के चिंतन की यह परंपरा प्रक्रिया बीसवीं सदी में भी दृष्टिगोचर होती है ।' परन्तु प्राय: यह देखा गया है, कि परंपरागत रूढिवादी लोग भाग्यवाद में अधिक विश्वास करते हैं । ऊषाजी के 'शेषायात्रा' उपन्यास की अनु जो परंपरागत संस्कारों से ग्रस्त है भाग्य में विश्वास करती है, इसीलिए- ' उसका भाग्य सहारते हुए जब बिरादरी की औरतों ने कहा - ' लॉटरिया का भाग जगा है । विलायत का डाक्टर इतना गहना कपडा, तब अनु को लगा, हॉ , शायद भाग्योदय हुआ है ।' [२] आगे चलकर कापती पढ लिखने के बाद भी अनु का भाग्य पर विश्वास वैसा ही बना रहता है, इसीलिए वह अपने भविष्य को भाग्य पर छोड देती है ' अब आगे जो भी समय और भाग्य दे, पुरे एहसास और जिम्मेदारी से स्वीकार करेगी । अगर कुछ न भी मिले तो भी कोई शिकायत नहीं होगी ।'[३]

' रुकोगी नहीं, राधिका ?' उपन्यास में राधिका की नानी जो पुराने विचारों की है । उसके विचार में विवाहादि बाते भाग्य पर निर्भर है । इसीलिए वह राधिका के विवाह के संदर्भ में बात करते हुए कहती है ' देखो जो भाग्य में हो । मुझे तो चिंता लगी रहती है । चाहती हूँ, मेरे सामने काज हो जाए, तो चैन आए ।' [४]

---

१ शेषायात्रा - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - प्र.सं.-१९८४ - पृ.७३

२ शेषायात्रा - ऊषा प्रियवंदा - राजकमल प्रकाशन -प्र.सं.१९८४ -पृ.२६ ।

३ - वही - पृ.१२४

४ रुकोगी नहीं,... राधिका ? - ऊषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - पाँचवा संस्करण - १९८० - पृ.१२६ ।

`सागर पार का संगीत` कहानी की देवयानी भी भाग्य में आस्था रखती है । इसीलिए वह अपने कनेडियन प्रेमी के प्रति अपने हृदय में उपजनेवाले प्रेम के बारे में सोचती है -- ` क्या इसी क्षण के लिए बंधु-बांधवों को पीछे छोड, भाग्य डोर से बँधी हुई यहाँ तक खिंच आयी ।` [१]

` मोहबंध ` कहानी में भी भाग्यवाद का उल्लेख मिलता है । कहानी की नायिका अबला अपने प्रेमी से सच्चा प्यार करके भी प्रेम में असफल हो जाती है, जब कि उसकी मित्र नीलू एकाधिक पुरुषों से संबंध रखने के उपरांत भी पति का प्रेम, सुख और मान पाती है । इसका संबंध अबला भाग्य से जोड देती है । और भाग्य की इस विषमता के बारे में सोचती रहती है -- ` किसी को इतना अनुराग, सुख और मान, किसी के भाग्य में कुछ नहीं, रूप जीत जाये, प्यार हार जाए, ...` [२]

यह माना जाता है , कि भाग्य की स्थिति सदैव एकसी नहीं रहती । कभी वह व्यक्ति,को सुख-समृध्दि और मान की जिंदगी देता है, तो कभी,अपयश और निराशा की । ` शेषायात्रा ` उपन्यास में भाग्य की इस अस्थिरता का उल्लेख हुआ है । उपन्यास की नायिका अनु अपने पति के साथ काफी ऐशो आराम से जिंदगी बिताती है, लेकिन जब उसे पति त्याग देता है, तब उसका जीवन जैसे उजड जाता है । अनु भाग्य में विश्वास करती है, इसीलिए वह निश्चय कर देती है, कि ` जो भी हो ..... जैसे भी हो, भविष्य और समय जो भी सामने लाये उसे स्वीकार करना है -- भाग्य ... अनु ने व्यंग्य से सोचा, वाह रे भाग्य । छ: सात साल इसी घर में एक राजकन्या की तरह रही हूँ, आज जमीन पर ही सोना पडेगा [३]।

---

१ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - द्वितीय संस्करण - १९८६ - पृ. ६४

२ मेरी प्रिय कहानियाँ - उषा प्रियंवदा - राजपाल एण्ड सन्स, प्रथम संस्करण - १९७४ - पृ. १००

३ शेषायात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - प्रथम संस्करण - १९८४ - पृ. १२१ ।

कभी कभी मनुष्य अपनी कर्मगत निष्क्रियता को भाग्य की आड में छिपाने का प्रयास करता है । 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में यह बात दिखाई देती है । उपन्यास के सुषामा की माँ आर्थिक विवशताओं के कारण सुषामा का विवाह वकील साहब के बेटे नारायण से नहीं करती । अपनी इस असमर्थता को भाग्य की ओटमें ढँकते हुए वह सुषामा से कहती है -- 'वकील तो बहुत चाहता थी, वही राजी नहीं हुए । जिसका जहाँ, जिससे संजोग जुडा होता है, वही होता है । हमारे करने न करने से क्या होता है ।'[१]

सारांश रूप में हम कह सकते हैं, कि परिवर्तित परिस्थितियों के साथ मनुष्य की धर्म के प्रति होनेवाली आस्था टूटने लगी तथा वे पूर्णत: नास्तिक भी नहीं हो पाये अत: उनके धार्मिक आचरण में एक आजिब विसंगति निर्माण हो गयी । जिसके कारण उसकी मानसिक शांती भी भंग हो गयी ।

समाज : सांस्कृतिक पक्ष --

संस्कृति वह सीखा हुआ व्यवहार है, जिसके द्वारा मानव पशु-समान से पृथक होकर सभ्य कहलाता है । संस्कृति का व्यापक अर्थ किसी समाज की जीवन पध्दति से है, जिसमें उसकी कला, शिल्प, विश्वास, मान्यताएँ, मूल्य, जीवन दर्शन से प्रभावित रहती है । समाज के लोगों का जीवन स्तर भी उस समाज की संस्कृति पर ही निर्भर रहता है । प्रत्येक समाज की संस्कृति भिन्न भिन्न रहती है । भारतीय समाज की भी अपनी एक विशिष्ट संस्कृति है ।

प्रत्येक समाज की संस्कृति में लोगों की कुछ प्रथायें, मान्यतायें, रीति-रिवाज भी विद्यमान रहते है । भारतीय संस्कृति की भी कुछ अपनी मान्यतायें,

---

१ पचपन खम्भे लाल दीवारे - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - चतुर्थ संस्करण - १९८४ - पृ. ३९ ।

प्रथायें, रीति-रिवाज रहे हैं । श्रीमती उषा प्रियंवदाजी के साहित्य में इसका चित्रण दिखाई देता है ।

भारतीय संस्कृति में अपने से उम्र में बडे व्यक्तियों के प्रति आदर प्रकट करने के लिए पॉव छूने की तथा उसके प्रत्युत्तर में शुभाशीष देने की प्रथा है । उषाजी के 'रुकोगी नहीं,.... राधिका ?' उपन्यास में इस प्रथा का चित्रण हुआ है -- 'नमस्ते जीजी ! दोनों ने एक साथ कहा और दरवाजे का ओर लपके । दरवाजा खोलकर पहले बडा चरण छूने झुका, फिर छोटा ।' .... शुभाशीष के शब्द कहते हुए उसे वैसा ही संकोच लग आया था, जैसा कि अपने पैर छुआते हुए ।'[१]

पूजनीय व्यक्ति तथा धार्मिक स्थलों में प्रवेश के पूर्व औरतों के लिए ऑचल से सिर ढँकने का रिवाज भी हमारी संस्कृति में रहा है । 'सागर पार का संगीत' कहानी में इसका संकेत मिलता है -- 'देवयानी ने सिर ढँक लिया और श्री करतारसिंह के साथ गुरुद्वारे प्रविष्ट हुई है,....'[२]

संस्कृति के अंतर्गत जनविश्वास भी आते हैं । प्रत्येक समाज में उसके संस्कृति के अनुरूप कुछ विश्वास प्रचलित रहते हैं । भारतीय संस्कृति में ईश्वर के प्रति श्रध्दा का भाव महत्वपूर्ण माना गया है । यही कारण है, कि भारतीय लोगों में यह विश्वास रहा है, कि आपत्तिकाल में काल में ईश्वर से मनौती करने से आपत्ति दूर हो जाती है । 'शेषायात्रा' उपन्यास में यह विश्वास दिखाई देता है । इस उपन्यास की अनु अपने पति के द्वारा त्याग दिये जाने पर फिर पति को पाने के लिए ईश्वर की मन्नत मॉगती है -- 'गॉड,ओ गॉड हेल्प मी । मेरी मदद करो, मुझे शक्ति दो, ओ सन्ती मैया,ओ साई बाबा... मनसा देवी, तुम्हें चीर बॉधूंगी, विन्ध्यवासिनी देवी,तुम्हें चुनरी चढाऊँगी,

---

१ रुकोगी नहीं,... राधिका ? - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, पॉचवा संस्करण - १९८० - पृ. २० ।

२ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, द्वितीय संस्करण - १९८६ - पृ. ७३ ।

गंगा मैय्या में भरे जाडों तारों की छाँह नहाऊँगी ...`[1]

जनविश्वास इतने दृढ होते हैं, कि शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर लेने पर उसके प्रति होनेवाला विश्वास वैसा ही रहता है । `रुकोगी नहीं,... राधिका ?` उपन्यास में एक ऐसे ही विश्वास का उल्लेख हुआ है `रास्ते में जब दो ऊँट भी मिले,तो स्कूल के दिनों की तरह उसने मन में कामना की,पापा से मेरा मिलना ठीक तरीके से हो जाये । फिर उसे अपने ऊपर हँसी आ गयी कि भला मनोकामना पूरी होने में बेचारे ऊँट क्या करेंगे, पर यह विश्वास वैसा ही मन में जमा हुआ था, जैसे कि मन्दिर में साडी या चीर या किसी पीर की समाधि पर धागा लटकाना ।`[2]

विश्वास के भाँति संस्कृति में कई रिवाजों का भी समावेश रहता है । भारतीय संस्कृति में शाम के समय घर में सोना या पडे रहना अच्छा नहीं माना जाता । इसके मूल में यह विश्वास है, कि संध्या के समय घर पर लक्ष्मीदेवता का आगमण होता है, और इसीलिए उस समय परिवार के सभी लोग उल्हासित और ताजा रहे । `प्रतिध्वनि` कहानी में इस रिवाज का जिक्र हुआ है - `कैसा लॉवड हो गया हो । शाम के वक्त यहाँ कोई कमरे में पडा रहता है ।`[3]

विवाह संस्कार से संबंधित कई प्रथा और रीति रिवाज भी हमारे संस्कृति में रूढ रहे हैं, जिसका विवेचन विधि संस्कार में हमने विस्तृत रूप से किया है ।

गतिशीलता संस्कृति का प्रमुख गुण है । समाज में होनेवाले निरंतर परिवर्तन के साथ साथ सांस्कृतिक मूल्यों में भी परिवर्तन होता रहता है । सांस्कृतिक परिवर्तन के भी अनेक कारण होते हैं । इन कारणों में प्रमुख कारण परसंस्कृति ग्रहण की प्रक्रिया है । आज भारतीय संस्कृति में भी पाश्चात्य संस्कृति

---

१ शेषयात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - प्रथम संस्करण-१९८४ - पृ.५९ ।

२ रुकोगी नहीं,... राधिका ? उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन,पाँचवा - संस्करण - - १९८० - पृ.५३ ।

३ कितना बडा झूठ - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन -तृ.सं.१९७६-पृ. ।

के प्रभाव से परिवर्तन आ रहा है ।

सुश्री प्रियंवदाजी ने अपने अधिकांश साहित्य का सृजन विदेशी पृष्ठभूमिपर किया है । उनके भारतीय पृष्ठभूमिपर लिखे गये, साहित्य के पात्र भी किसी न किसी रूप से विदेश से संबंधित रहे हैं । इसी तथ्य के कारण उनके साहित्य में भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति का मिला जुला रूप दिखाई देता है ।

आज भारतीय लोगों के रहन-सहन में भी पाश्चात्य प्रभाव दिखाई दे रहा है हमारे संस्कृति में नारी के परिधान के लिए आम तौर से साडी प्रयुक्त की जाती थी, परन्तु आज पाश्चात्य सभ्यता में पली हुई नारी के पहनावे में परिवर्तन आया है । ' पिघलती हुई बर्फ ' कहानी की ' सुधीरा का चेहरा भारतीय था, रंग-ढँग पाश्चात्य । कटे हुए बाल और नीचे मले की ब्लाऊज, कमर को हल्का-सा झटका देते हुए चलने का अन्दाज । कभी कभी वह साडी भी पहनती थी, पर साडी पहनने पर उसकी अभारतीयता और भी प्रखर हो जाती थी ।'[१]

' सागर पार का संगीत ' कहानी में भी पाश्चात्य परिधान किये भारतीय स्त्रियों का संकेत मिलता है - ' चेहरे वही हैं, कहीं भी देखे जायें, भारतीय चेहरे नहीं छिपते - पर सफेद बालोंवाली वे वृध्दाएँ, प्रौढाएँ पाश्चात्य परिधान में कैसी असंगत-सी दीख रही थी ।'[२]

आज केवल परिधान ही नहीं, भारतीय नामों का भी पाश्चात्य ढँग में रूपांतरण किया जाता है । ' रुकोगी नहीं,..राधिका ? ' उपन्यास में यह बात दिखाई देती है ' क्रिस, यानी कृष्णा - वह सिल्क की लंबी चोगेनुमा पाश्चात्य पोशाक पहने थी, ऊँचे गले पर तार का काम । पर भारतीय रंग व चेहरा कहीं नहीं छिपता ।'[३]

---

१ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन-द्वि.सं.१९८६-पृ.९८।

२ - वही - पृ.७३ ।

३ रुकोगी नहीं,..राधिका ? - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, पाँचवा सं., १९८०-पृ.८९ ।

भारतीय लोगों को जैसे पाश्चात्य संस्कृति का आकर्षण रहा है, उसी प्रकार पाश्चात्य लोगों के मन में भी भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षण रहता है । यही कारण है कि कई विदेशी नारियाँ भी भारतीय वेशभूषा को अपनाती नजर आती हैं । 'चाँदनी में बर्फ पर' कहानी में इसका उल्लेख मिलता है - 'जब बनारस गयी थी, तो मेरी मैलनिक थी, कटे हुए बाल थे, स्कर्ट पहनती थी । लौटी तो अपने को मीरा कहती थी । साडी ऐसी सहजता से पहनने लगी थी जैसे सदा से यही वेशभूषा रही हो । अब भी साडी पहन कर वह सभी भारतीय स्त्रियों से अधिक सुन्दर दीखती थी और अगर हेम ने आग्रह कर उसे रोक न दिया होता तो वह अपने कंधे तक बढ आये सुनहरे बालों को काला रँगवा देती ।'[1]

पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से भारतिय लोगों के खान-पान से उठने.. बैठने के तौर - तरीकों में भी परिवर्तन दिखाई देता है। भारतिय संस्कृति में खाना खाने के लिए भारतीय बैठक अपनाई जाती थी, अर्थात जमिन पर पलथी मारे बैठा जाता था । परंतु अब इसकी जगह मेज-कुर्सी आयी हैं । खान-पान में भी पाश्चात्य चीजें आ गयी हैं । पाश्चात्य संस्कृति में मद्यपान कोई बूरी बात नहीं मानी जाती । बल्कि उनकी सभ्यता में अपने अतिथि को जलपान के भाँति शराब देने की प्रथा हैं । पाश्चात्य सभ्यता में पले भारतिय लोगों में भी इस प्रथा का सहज स्वीकार दिखाई देता है । 'शेषयात्रा' उपन्यास में इसका कई जगहों पर उल्लेख मिलता है । जैसे .. 'शाहा शैम्पेन भरे गिलास अतिथियों को देने लगे, अनु ने भी गिलास उठा लिया । वह मुस्कराते हुए बोले, 'आप पहली बार ले रही हैं, हमारी खुशी में शामिल होने के लिए ... धन्यवाद ।'[2]

---

१ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - द्वितीय संस्करण- - १९८६ - पृ.११० ।

२ शेषयात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - प्रथम संस्करण - - १९८४ - पृ.५१ ।

खुशी के मौके पर भी खुशी मनाने के लिए भी मद्यपान किया जाता है । इसी उपन्यास में अनु और दीपांकर की शादी तय हो जानेपर - ' जयन्त और दीपांकर बाजार गये और बाल्टी भर बर्फ और शैम्पेन की कई बोतलें ले आये । सारे दिन वह शैम्पेन पीते रहे, खुशी का वातावरण घर में घुलता रहा, सुख और साँहार्द की लहरें अनु को दुलारती रही ।[1] '

' रुकोगी नहीं,.... राधिका ?' उपन्यास में राधिका के बड-दा विदेश यात्रा के बाद से रोज शाम स्कॉच पीने लगे थे ।[2] '

खाने के ढंग में भी अब परिवर्तन आया है, हमारे संस्कृति के अनुसार भोजन के आरंभ में मीठे पदार्थों का सेवन करना उचित माना जाता है परंतु आज भोजन के अंत में ' स्वीट डिश ' के रूप में मीठे पदार्थों का सेवन किया जाने लगा है । ' रुकोगी नहीं,... राधिका ?' उपन्यास में इसका जिक्र मिलता है --'' राधिका ने स्वीट डिश, आइसक्रीम के साथ स्ट्रॉबेरी खाने पर ध्यान दिया ।[3] '' खान-पान के पदार्थों के बारे में आये परिवर्तन का भी कई स्थानों पर उल्लेख मिलता है ।

पाश्चात्य संस्कृति की कई बुराइयों का भी हमारे संस्कृति पर प्रभाव दिखाई देता है । ' ट्रिप ' कहानी में मादक द्रव्यों के सेवन का चित्रण मिलता है ।

संस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष उसके उत्सव पर्व है । भारतीय संस्कृति में उत्सव पर्वों का अत्याधिक महत्व रहा है । सुश्री प्रियंवदाजी के साहित्य में कई उत्सव-पर्वों का चित्रण हुआ है ।

---

१ शिष्टाचार - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - प्रथम संस्करण - १९८४ - पृ. १३३ ।

२ रुकोगी नहीं,.. राधिका ? - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - पाँचवा संस्करण - १९८० - पृ. १६

३ - वही - पृ. ४९ ।

वर्तमान में भारतीय उत्सव-पर्वों में भी पाश्चात्य संस्कृति का प्रवेश हुआ है । 'शेषायात्रा' उपन्यास में विदेश में स्थित भारतीयों द्वारा मनाये गये भारतीय स्वतंत्रता दिवस का उल्लेख मिलता है -- 'पन्द्रह अगस्त आकर चला जाता है । छब्बीस जनवरी भी, और शाहा दम्पत्ति अपने नये देश का स्वतंत्रता दिवस जोर से मनाते हैं । इस बार फिर पार्टी उन्हीं के घर होगी । सभी अतिथि एक-एक पकवान बनाकर लायेंगे, विभा के कबाब, कंचन के छोले, कीरत का पटेल अण्डा हलुवा और अनु की रस मलाइया । आदमी लोग बड़े पेड की छाँह में बैठकर स्कॉच पियेंगे, औरतें अन्नानस के रस में रम, बच्चे फूलों की क्यारियों रौंदेंगे, शोर मचायेंगे, फिर अँधेरा होने पर गाडियों में ठूसकर सब लोग पास के पार्क में आतिशबाजी देखने जायेंगे ।'[1]

इसी उपन्यास में अनु के अमेरिकन नागरिक बन जाने पर मनाये गये उत्सव का भी जिक्र मिलता है -- 'उस दिन लडकियों ने उसके अमरीकन बन जाने पर उत्सव किया । केक, जिसपर सितारों और धारियोंवाला सफेद, लाल और नीला झण्डा बना है । साथ में पीने को पंच और खाने को आइसक्रीम ।.... अन्त में सब राष्ट्रीय गान गाते हैं, 'ओ से कैन यू सी ...'[2]

इसके अतिरिक्त विवाह तथा नामकरण आदि कई उत्सवों का भी चित्रण प्रियंवदाजी के साहित्य में मिलता है, जिसका हमने 'विधि-संस्कार' में विस्तृत विवेचन किया है ।

प्रियंवदाजी के कथात्मक साहित्य में प्रतिबिंबित संस्कृतिक पक्ष देखते हुए हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि इसमें भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति का सामंजस्य दिखाई देता है । इसका महत्वपूर्ण कारण यह है कि प्रियंवदाजी भारत

---

१ शेषायात्रा - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - प्र.सं. १९८४ -पृ. ५४।

२ - वही - पृ. १२३ ।

और अमरीका दोनों जगहों में रह चुकी हैं, अत: उन्होंने इन दोनों संस्कृतियों को निकटसे देखा हैं । अत: उन्होंने दोनों सांस्कृतिक पहलूओं को सूक्ष्मता से अंकित किया हैं ।

समाज :- विधि - संस्कार -

भारतीय समाज में विधि-संस्कारों का महत्व अनन्य साधारण हैं । व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक उसपर कई संस्कार किये जाते हैं । संस्कारों के द्वारा व्यक्ति के आत्मिक और शारीरिक संवर्धन का प्रयत्न किया जाता हैं । अत: व्यक्ति के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में भी संस्कारों का महत्व हैं । संस्कार कई प्रकार के होते हैं, परंतु इस में भी व्यक्ति के बाल्यावस्था के संस्कार तथा विवाह संस्कार ही अत्याधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं । सुश्री ऊषा प्रियंवदाजी के साहित्य में भी इन्ही दो संस्कारों का चित्रण अधिक हुआ हैं । अत: हम इन्हीं संस्कारों का विवेचन करना चाहेंगे ।

बाल्यावस्था के संस्कार - भारतीय समाज में पुत्रजन्म को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता हैं । अत: पुत्र-जन्म के उपरांत हर्षोल्लास को प्रकट करने के हेतू सांस्कृतिक समारोह का आयोजन भी किया जाता हैं । ऊषाजी के 'पैराब्लेटर' कहानी में पुत्र जन्म का महत्व और जन्मोत्सव का जिक्र किया गया हैं । जन्मोत्सव पर पूरी-पूरी रात गाना बजाना होता रहता हैं । छठी और बरहो के अवसर पर सभी परिचित नारियाँ एकत्र होकर ढोलक की थाप पर जन्मोत्सव संबंधी गीत गाती हैं, नाचती हैं । जैसे कि प्रस्तुत कहानी में दिखाया हैं -- " पर कालिन्दी के दु:ख का पूरा एहसास उसे तब हुआ जब कि पडोस में मुंशीजी के पाँच लडकियों के बाद लडका होने के उपलक्ष्य में रतजगा था ।... रात के अँधेरे में जब सारा कोलाहल डूब गया, तब ढोलक की ढप-ढप और संमिलीत स्त्री कंठों का बेसूरा

गीत स्पष्ट सुनाई पडने लगा[1]।' ,' एक कोई दूसरा' कहानी में भी पुत्र-जन्मोत्सव का संकेत मिलता है -' बम्बई में भैया के घर पर बडी चहल-पहल थी । तमाम संबंधी आये हुए थे, क्योंकि कई लडकियों के बाद यह पहला पुत्र हुआ था।' [2]

बाल्यावस्था के संस्कारों में छटी और बरही का संस्कार बालक के प्राथमिक संस्कार होते हैं ।' पैराब्लेटर' कहानी में इन संस्कारों का संकेत मिलता है -' पास - पडोस में आये दिन किसी-न-किसी के बच्चे की छटी-बरही हुआ करती थीं ।' [3]

आज पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण संस्कारों के परंपरागत विधियों में परिवर्तन आ रहा है । आज उच्च मध्यवर्गीय लोग अपनी प्रतिष्ठा बढाने के लिए अधिकाधिक पाश्चात्य ढंग को अपना रहे हैं, जिससे संस्कारों का धार्मिक महत्व कम होकर उसमें दिखावटीपन आने लगा है ।' शेषायात्रा' उपन्यास में अमरिका में जा बसे भारतीय लोगों में मनाये जानेवाले जन्मोत्सव समारोह का विवेचन मिलता है -' आलोक और नीरजा ने इसी साल शादी की थी और अब बेटा होने का समारोह था । उन्होंने एक हॉल किराये पर लिया और सौ-सवासौ लोगों को दावत पर बुलाया, रसोइया उनका न्युयार्क से आया था ।... हॉल में काफी लोग आ चुके थे । कुर्सियों पर औरतें अपने-अपने गुट में बैठी थी, पुरुष बीयर के ड्रम के पास खडे थे । सजे-सजाये बच्चे अनियन्त्रित रूप से पूरे हॉल में दौड लगा रहे थे ।' [4]

बाल्यावस्था के संस्कारों में' नामकरण संस्कार' अधिक महत्वपूर्ण होता

---

१ जिन्दगी और गुलाब का फूल - उषा प्रियंवदा - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन - पृ.१६ ।

२ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन, द्वि.सं.-१९८६-पृ.३४

३ जिन्दगी और गुलाब का फूल - उषा प्रियंवदा - भारतीय ज्ञानपीठ - प्रकाशन - पृ.१५-१६ ।

४ शेषायात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन- प्र.सं.१९८४-पृ.३६ ।

हैं । ` नामकरण संस्कार ` का आयोजन जन्मोपरांत बालक का नाम रखने के हेतु किया जाता हैं । अन्य संस्कारों को लोग भले ही न करे यह संस्कार प्रत्येक परिवार में किया जाता हैं । प्रत्येक माता पिता अपने बालक को ऐसा नाम देते हैं जो कि सुंदर हो, सुगम हो, उद्देश्यपूर्ण हो, तथा ऊँची भावना को जाग्रत करनेवाला हो । बच्चे को किस नाम से पुकारा जाए इस बात को लेकर कभी-कभी घर में विभिन्न मत बन जाया करते हैं । उषाजी के ` दृष्टिदोष ` कहानी में इसका उल्लेख मिलता हैं -- ` सास पौत्र का नाम स्कंद रखना चाहती थी, माँ राकेश । चंद्रा को न स्कंद पसंद था, न राकेश । पर सास ने जब बच्चे को स्कंद कहकर पुकारा तो चंद्र ने कहा, ` मैं इसका नाम स्कंद नहीं रखूँगा । `[१]

बच्चे के नाम को लेकर होनेवाले विभिन्न मतों के कारण कभी-कभी बच्चे को एकाधिक नामों से पुकारा जाता हैं । ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में ऐसा प्रसंग दिखाई देता हैं -- ` प्रभा ने बच्चे को उठाया और सुषामा की गोद में दे दिया । सुषामा ने उसके मुलायम गाल को छूते हुए पूछा , ` इसका क्या नाम रखा गया ? ` ` नारायण दादा तो इसका नाम अमित रखना चाहते हैं, अम्मा ने आनन्द रखा हैं । ` प्रभा ने बताया । `[२]

बच्चे का नाम रखते समय उसके भविष्य की संभावनाओं का भी ध्यान रखा जाता हैं । ` शेषायात्रा ` उपन्यास में यह बात दिखाई देती हैं -- ` बच्चे का नाम क्या रखा ? ` उसने नीरजा से कहा । .. ` ` जयदेव, ` आलोक ने कहा , ` बडे होकर जैसा चाहेगा अगर इण्डियन नाम चाहेगा, तो जय और अमेरिकन चाहेगा तो डेव । `[३]

---

१ जिन्दगी और गुलाब के फूल - उषा प्रियंवदा - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन - पृ. १३३

२ पचपन खम्भे लाल दीवारें - उषा प्रियंवदा - चतुर्थ सं. - १९८४ -राजकमल प्रकाशन- पृ. ३७

३ शेषायात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - प्रथम संस्करण - पृ. ३७ ।

बच्चे का जन्म उसकी जन्मदात्री के लिए भी एक महत्वपूर्ण घटना होती है, क्योंकि मातृत्व प्राप्त करने के उपरान्त उसका यह दायित्व बना रहता है, कि वह अपनी संतान की परवरिश अच्छी प्रकार से करे तथा उसका भविष्य उज्ज्वल बनाने में अपना योगदान दे । इसीकारण बच्चे के नामकरण समारोह में यह भी एक भावना निहित रहती है, कि अपने इस दायित्व को अच्छी प्रकार से निभाने के लिए बच्चे की माता को बडे बुजुर्गों से शुभाशिष मिले । उषाजी के ' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास में नामकरण समारोह के अवसर पर दिये जानेवाले शुभाशिषों का संकेत मिलता है -- ' नारायण की पत्नी के पीले मुखपर बडी आभा थी, घर-बाहर सब ओर से उस पर सुख कामनाओं और आशिषों की वर्षा की जा रही थी । ' [१]

<u>विवाह संस्कार</u> -- विवाह का हिन्दु संस्कारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है । हिन्दुओं में विवाह एक सामाजिक आवश्यक्ता ही नहीं, अपितु वह प्रत्येक व्यक्ति का एक अनिवार्य धार्मिक कर्तव्य भी समझा जाता है । देवऋण, पितृऋण और ऋषि ऋण के शोधन के लिए भी हिन्दुओ में विवाह को अनिवार्य माना गया है । विवाह का उद्देश्य उपभोग नहीं, बल्कि सर्वांगपूर्ण प्रजा का निर्माण करना है ।

उषा प्रियंवदाजी ने अपने कथा साहित्य में विवाह संस्कार संबंधित पारम्पारिक और आधुनिक रीति-रिवाजों और रस्मों को दिखाया है ।

परंपरागत भारतीय समाज में लडके-लडकियों का विवाह माता-पिता द्वारा निश्चित किया जाता था । अत: विवाहपूर्व लडके-लडकियों को माता-पिता के सम्मुख ही एक-दूसरे को देखकर विवाह की स्वीकृति देनी पडती थी । इसीकारण समाज में विवाह के हेतू लडकियों को दिखाने की प्रथा रूढ हो गयी ।

---

१. पचपन खम्भे लाल दीवारें - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - चतुर्थ संस्करण - १९८४ - पृ. ३७ ।

इस प्रथा के अनुसार लडकेवाले लडकी के घर आकर उसे देख लेते हैं और फिर अपनी सहमति - असहमति को बता देते हैं । उषाजी के 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में लडकी दिखाने का उल्लेख मिलता है -- 'कल शाम लडकेवालों का तार मिला, कि दिल्ली आकर लडकी दिखा दो । लडका रेल्वे सर्विस में है । किसी शादी में दिल्ली आये हुए हैं सब कोई ।'[१]

कई बार लडकियों को किसी विवाहादि समारोह में भी दिखाया जाता है । 'टूटे हुए' कहानी में लडकी दिखाने के ऐसे ढंग का जिक्र हुआ है -- 'शशिबाला के बारे में सोचना चाहता हूँ । कुछ समय पहले एक संबंधी की बारात में गया था, वहीं उसे देखा था । जो बीच में पडे थे उन्होंने कहा, देख लो लडकी, वधू के पास जो नीली साडी पहने बैठी है, वही है । शायद उसे भी जता दिया गया होगा, मुझसे दृष्टि मिलने पर वह लजाकर थोडा-सा मुड गयी थी ।'[२]

आज-कल लडकियों को अधिकांशत: ऐसे ही दिखाया जाता है । विवाहादी समारोह में कई कुँवारे लडके-लडकियाँ आती है, वहीं एक-दूसरे को देखकर शादीयाँ तय की जाती है । इसीलिए आज विवाहयोग्य युवक-युवतीयों को इसी उद्देश्य से ही ऐसे उत्सव समारोह में भेजा जाता है । 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में इस बात का संकेत मिलता है -- 'नीरन जब से बडी हो गयी थी, माँ उसे सब जगह सजा सँवारकर साथ ले जाती थी, कि चार लोग देखे और चर्चा करें कि शर्माजी की मँझली लडकी बडी सुंदर है ।'[३]

---

१ पचपन खम्भे लाल दीवारें - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण - १९८४ - पृ. ३७ ।

२ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - द्वितीय संस्करण - १९८६ - पृ. १२६ ।

३ पचपन खम्भे लाल दीवारें - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण - १९८४ - पृ. ३६ ।

आधुनिक विचारोंवाले समाज में लडके लडकीयों का परस्पर परिचय कराया जाता है और फिर दोनों की सहमति असहमति को जानकर ही विवाह तय किया जाता है । `झूठा दर्पण` कहानी में इस बात का जिक्र हुआ है । इस कहानी की सत्यभामाजी अमृता और कुँवर का परिचय एक पार्टी में इसी उद्देश्य से करा देती है ।

लडका-लडकी के एक-दूसरे को पसंद कर लेने के पश्चात् विवाह निश्चिती के हेतू `सगाई` समारोह का आयोजन किया जाता है, जिसमें वर पक्ष के लोग वधू को कोई आभूषाण पहनाकर विवाह की बात पक्की करदेते है । ऊषाजी के `एक कोई दूसरा` कहानी में सगाई में दिये जानेवाले आभूषाणों का उल्लेख मिलता है --` विजय की बडी बहन पहले भाभी से बात करती रहीं । फिर वह मेरे पास आ बैठीं । उनके संकेत पर उनकी नौकरानी एक ढँका हुआ थाल ले आयी । जब उसका आवरण हटाया गया तो उसमें आभूषाणों के लाल डिब्बों का अम्बार लगा था । उन्होंने मेरा हाथ थाम लिया और मुझे अँगूठी पहनाने लगीं ।`[१]

`शेषायात्रा` उपन्यास में भी सगाई का जिक्र हुआ है -` बडी लल्ली गोद भरने की सारी तैयारी करके आयी है । सतलडा हार दे रही है, बीस तोले का । दो बडे बक्स उतरे हैं, बेटा,बहू लेकर ही वापस जायेंगे ।`[२]

`चाँद चलता रहा` कहानी में भी सगाई तथा सगाई पर वर पक्ष की तरफ से जो आभूषाण मिले उनकी झालक दिखाई गई है --` पहले अरविंद प्राय: घर पर आते थे । पर सगाई होने के बाद ताई ने मुझ पर बंधन लगा दिये थे.... उन लोगों ने बहुत बडी पार्टी दी थी । ताई ने मुझे भी भेजा । गर्मी के दिन थे इसीलिए मैंने सफेद साडी पहनी थी, बालों में कलियाँ लगाई थी । सगाई पर

---

१ एक कोई दूसरा - ऊषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - द्वितीय संस्करण - १९८६ - पृ. २४ ।

२ शेषायात्रा - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - प्रथम संस्करण - १९८४ - पृ. १४ ।

मिला मोतियों का पूरा सेट पहना था ।'[१]

विवाह के समय वधू के शृंगार को रस्म भी अत्याधिक महत्वपूर्ण मानी जाती हैं । विवाह प्रसंग के लिए वधू को विशिष्ट प्रकार का पोषाख, गहने पहनाये जाते हैं । विवाह के पूर्व रात्रि में मेहंदी, हल्दी आदि रस्मों को भी निभाया जाता हैं, उषाजी के 'शेषायात्रा' उपन्यास में इसका उल्लेख मिलता हैं --' अनु ने हँसते हँसते दिव्या की सारी बातें मान लीं । दिव्या के साथ जाकर नयी जामावार साडी ले आयी । मूँगा और मोती का सेट पसंद कर लिया, हीरे की अँगूठी का नाप भी दे दिया । पर संगीत, मेहंदी, हल्दी इन सब रस्मों को सहेलियों के इसरार करने पर भी स्पष्ट मना कर दिया ।'[२]

'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में भी वधू के विशिष्ट पहनाने और शृंगार का संकेत मिलता हैं --' चन्दन बिन्दू लगाकर वह वधू बनी होगी ।..... स्वाती ने लाल साडी पहनकर, अग्नि के सम्मुख शपथ ली होगी ।'[३]

आज वधू की सजावट पर भी विशेषा ध्यान दिया जाता हैं । जयमाला के समय सभी की निगाहें उसी की ओर लगी होती हैं । 'झूठा दर्पण' कहानी में वधू को कौनसा वस्त्र पहनाया जाये, इस पर उलझन हो रही हैं -' अमृता चुप रही । उसके जाने के बाद ममी और बल्लीमारोंवाली मौसी आकर इस बात पर विवाद करने लगी, कि बारात के आगमन के समय अमृता को कौनसा जोडा पहनाया जाये ।' इसमें वधू को सजाने का भी उल्लेख मिलता हैं --' अपने को कल वह अपने उन संबंधियों के दया पर छोड देगी । हाथ में चुपचाप मेहंदी लगवा लेगी । मुख पर

---

१ जिन्दगी और गुलाब के फूल - उषा प्रियंवदा - भारतीय ज्ञानपीठ - प्रकाशन - पृ.१२३ ।

२ शेषायात्रा - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - प्र.सं., १९८४-पृ.१३४।

३ पचपन खम्भे लाल दीवारें - उषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन - चतुर्थ संस्करण - १९८४ - पृ.६६ ।

चन्दन बिन्दू , और उसके बाद फूलों के गहने भी पहन लेगी ।'[1]

कई परिवारों में वधू को सजाने का एक अपना विशिष्ट रिवाज रहता है । इस कहानी में इसका संकेत मिलता है -' परसों शाम के लिए तुम्हारे लिए फूलों के आभूषण बनवाने हैं । इन लोगों के यहाँ नयी बहु को पहली रात फूलों के गहने पहनाने का चलन है ।'[2]

विवाह-प्रसंग में वधू के लिए सुहाग-चिन्ह देने की प्रथा भी रही है । ' मछलियाँ ' कहानी में मुकी की माँ उसके लिए भेजे सुहाग चिन्हों का उल्लेख मिलता है -- ' मुकी के लिए उसकी माँ ने लाल बनारसी साडी, शंख चूडियाँ, कुंकुम भेजा है । वही पहनेगी ।'[3]

विवाह समारोह में हर्षोल्लास मनाने के हेतू गाना-बजाना, संगीत नृत्य आदि सांस्कृतिक विधियों का प्रचलन भी परंपरा से चला आया है । विवाह के पूर्व, हल्दी-मेहंदी के अवसर पर मोहल्ले की औरतें लडकियाँ ढोल बजाकर विवाह के गीत गाती हैं । साथ वधू तथा वर की चूहल भी की जाती है ।' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास में यह बात दिखाई देती है -- ' बरामदे में मुहल्ले की कुछ लडकियाँ गा-बजा रही थीं । उन्होंने नीरन को जबर्दस्ती अपने मध्य में बिठा रखा था । पडोसिन भाभी ने मंद स्वर में एक पंक्ति गायी जिसे सुन सब लडकियाँ हँस-हँसकर एक-दूसरे पर गिरने लगीं, और नीरन लाल हो आयी ।'[4]

---

१ एक कोई दूसरा - ऊषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - द्वितीय संस्करण - - १९८६ - पृ. ४८ ।

२ - वही - पृ. ३७ ।

३ कितना बडा झूठ - ऊषा प्रियंवदा - राजकमल प्रकाशन, तृतीय संस्करण - १९७६ - पृ. १२७ ।

४ पचपन खम्भे लाल दीवारें - ऊषा प्रियंवदा - चतुर्थ संस्करण - राजकमल प्रकाशन - पृ. १३३ ।

विवाह में बारात का भी महत्व माना गया है । बारात में `वर` तथा `वर` पक्ष के लोग विवाह के लिए `वधू` के घर गाजे-बाजे के साथ आते हैं । बारात में भी नाच-गाने का कार्यक्रम रहता है, जिससे लोगों का मनोरंजन किया जाता है ।` रुकोगी नहीं,... राधिका ?` उपन्यास में ऐसी बारात का जिक्र हुआ है ` कैसी धूम से तेरे पापा का बारात चढी थी, कानपूर से तीन नाचनेवालियाँ आयी थीं, और आस-पास के गावों के ठठ-के-ठठ आकर लोग जमा हो गये थे ।` [१]

विवाह में द्वाराचार की भी एक प्रथा है । बारात के आगमन के पश्चात् यह एक महत्वपूर्ण प्रथा है । जब बारात बाजे-गाजे के साथ वधू के द्वार पर आती है और कन्यापक्षवाले जिसप्रकार वर का और बारातियों का स्वागत करते हैं उसे ही द्वाराचार कहते हैं ।` चाँदनी में बर्फ पर` कहानी में द्वाराचार की प्रथाका संकेत मिलता है --` कल्याणी की तीसरी बहन का उसी रात विवाह था । कुछ मेहमान हेम के घर भी ठहरे थे । एक दिन पहले तक हेम को ज्वर था और द्वाराचार में सम्मिलित होकर अपने कमरे में आकर लेट गया और खुले हुए दरवाजे से आकाश में छूटते अनार व आतिशबाजी को देखता रहा था[२]।`

सार रूप में यह कह सकते हैं, कि उषा प्रियंवदाजी के कथा साहित्य में भारतीय समाज में होनेवाले विभिन्न संस्कारों की झलक दिखाई देती है , परंतु आज ये संस्कार पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से प्रभावित होकर अपना रंग-रूप बदलते चले जा रहे हैं ।

---

१ रुकोगी नहीं,... राधिका ? - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - पाँचवा संस्करण - १९८०- पृ. १२७ ।

२ एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा - अक्षर प्रकाशन - द्वितीय संस्करण - १९८६ - पृ. ११८ ।